निवेदन

रीति कालीन काव्य-साहित्य में पदमाकर कवि का जगद्विनोद प्रथम कोटि के साहित्य का प्रमाण है। पदमाकर के स्फुट कवित्त सवैये तो प्राय लोगों ने कण्ठस्थ करके रख लिये हैं किन्तु आचार्य पं० रामचन्द्र-शुक्ल के शब्दो में "रसिकों का कण्ठहार" जगद्विनोद सरस हृदय, रसज्ञ-रसिको के मनोरंजन का अद्भुत साधन होने के साथ-साथ तत्कालीन रीति परम्परा का भी सम्पूर्ण-रूपेण परिचायक है, जिसमें रस, आलम्बन, विभाव, अनुभाव, स्थायी भाव, संचारी भाव तथा नायक-नायिका भेद मनोहारी वाणी में यथानुकूल प्रस्फुटित हुये हैं।

प्रस्तुत सम्पादन में जगद्विनोद की विभिन्न पुस्तकों के आधार पर शुद्ध से शुद्ध रूप रखने का प्रयास किया गया है। पाठान्तरों की वास्तविकता प्रदान करने का भरसक प्रयत्न करने में मुझे अपने प्रिय मित्र प० चन्द्रभान जी रावत, एम० ए०, एन० एल० बी०, साहित्य-रत्न तथा रिसर्च स्कालर हिन्दी विश्व-विद्यालय आगरा और श्री भगवानसिंह "विमल" साहित्य-रत्न से बहुत कुछ सहायता मिली है। अतः इन दोनो सज्जनों को मैं हृदय से धन्यवाद देता हू। साथ ही श्रीयुत डा० बरसानेलाल जी चतुर्वेदी, एम० ए०, एम० काम०, पी० एच० डी० का परम कृतज्ञ हू, जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की है।

अन्त में मैं उन समस्त पाठको का भी आभारी हूगा जो इसे आद्योपान्त पढ़कर इसकी सम्पादन-सम्बन्धी त्रुटियों के लिये मुझे

पद्माकर भी रीतिकालीन कवि हैं। अतः रीतिकाल की छाया से मुक्त रहना उनके लिये भी असंभव था। फिर भी ये न समझना चाहिये कि पद्माकर की कृतियो में पढने योग्य सामग्री का अभाव है अथवा उसमें कला का विकास कुछ कम हुआ है। सस्कृत के महाकवि कालिदास भी शृङ्गारी कवि थे। उनके काव्य को पारखी जन यदि वासना का प्रलाप मानले तो इसमें कालिदास का महत्त्व कदापि कम नही होने का। हां, उन पारखियो पर ही सर्वाङ्गीण प्रवृत्ति के अभाव का दोष अथवा सामाजिक असहिष्णुता सम्बन्धी दोषारोपण भले ही हो सकता है।

पद्माकर का जगद्विनोद हिन्दी भाषा के रीतिकालीन काव्य की एक अमूल्य निधि है, इसमें तनिक भी सदेह नही। कारण कि इसमें एक ओर रीतिकाल की काव्य परम्परा का पालन किया गया है तो दूसरी ओर उदाहरणो में चुभते हुये भाव कोमलतम-कल्पनायें तथा मजी हुई शब्दावली का प्रयोग पाठको के हृदय में स्वय स्थान प्राप्त करता चला जाता है।

कवि के शब्दों में जगतसिंह नरनाह के विनोदार्थ ही इसकी रचना भले ही हुई है किन्तु पुस्तक जगतसिंह को पाकर प्रसिद्ध हुई है या जगतसिंह जगद्विनोद के कारण हिन्दी के काव्य-साहित्य में अमर हो गये, इसका निर्णय करना आज कठिन सा हो गया है।

जगद्विनोद का सपादन प्रेमजी ने केवल इसी दृष्टि से किया है कि व्रजभाषा के ग्रन्थों का सम्पादन व्रज-भाषा-भाषियों के हाथों से हो तो व्रजभाषा के शब्दों का वास्तविक उच्चारण ज्यो का त्यों हो और व्रजसाहित्य के प्रेमी पाठकों को काव्य का सम्पूर्ण रसास्वादन करते हुए कवि की भावनाओं तक पहुचने की सामर्थ्य प्राप्त हो।

साथ ही ग्रन्थकार का परिचय तथा काव्य की समालोचना भी यथोचित रूप से देकर पुस्तक को और भी उपयोगी बनाया गया है। अन्त में कठिन शब्दों का शब्दार्थ भी दिया गया है, जिससे ब्रज-भाषा के विशेष शब्दों को समझने में पाठक को सहायता मिलती है। पद्माकर की कविता में ठेठ ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है, अतः उसमें ऐसे अनेक शब्द आ गये हैं, जिनका प्रयोग ब्रज की लोकवाणी के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं पाया जाता है। सम्पादक ने प्राय. ऐसे शब्दो का अर्थ देकर पाठकों के लिये विशेष कार्य किया है।

रामजीद्वारा, मथुरा। डा० बरसानेलाल चतुर्वेदी
१५-१-५७ एम. ए., एम. कॉम., पी. एच. डी.

साजि चतुरङ्ग चमू जंग जीतिवे के लिये,
हिम्मत वहादुर चढ़ै जो फर फैल पै।
लाली चढ़ै मुख पै, वहाली चढै बाँहनु पै,
काली चढ़ै सिह पै, कपाली चढ़ै बैल पै॥

कहा जाता है कि एक बार हिम्मत वहादुर के दरबार में ही इनकी ठाकुर कवि से भेंट हुई थी। इन्होंने ठाकुर की कविता के विषय में अपनी स्वतन्त्र राय प्रकट करते हुए स्पष्ट कह दिया था कि कविता अच्छी और भावमय है किन्तु शब्द हलके हैं।

हिम्मत वहादुर के यहा से सवत् १८५५ में ये सितारा पहुचे, जो रघुनाथ राव राघोवा की राजधानी थी। रघुनाथराव राघोवा ने भी इन्हे सम्मानित करते हुए एक हाथी, एक लक्ष मुद्रा तथा दस गाव पुरस्कार में दिये। तत्पश्चात् स० १८५६ में पद्माकर पुन सागर के रघुनाथ राव के यहाँ निमन्त्रण पाक सागर चले गये। इनके यहाँ इनका अत्यन्त सम्मान था। उनकी रानिया तक इनसे पर्दा नही करती थीं। इन्ही अप्पा साहब—रघुनाथराव—की तलवार की प्रशसा पदमाकर ने निम्न कवित्त में की है—

दाहन ते दूनी तेज तिगुनी त्रिसूलन ते,
चिल्लन ते चौगुनी चलाक चक्र-चाली तें।
कहै पदमाकर महीप रघुनाथ राव!
ऐसी समसेर सेर सत्रुन पै घाली तें॥
पचगुनी पब्बतें पचीस गुनी पावक तें,
प्रगट पचास गुनी प्रलय प्रनाली तें।
साठ गुनी सेस तें, सहस्र गुनी सापनु तें,
लाख गुनी लूक तें, करोर गुनी काली ते॥

सागर से पद्माकर फिर प्रतापसिंह के दरबार में आकर जयपुर

रहने लगे। स्वय महाराज प्रतापसिंह कवि थे और कवियो का सम्मान भी करते थे। उन्होंने पदमाकर को विशेष सत्कार के साथ अपने यहा दरबारी कवि बना कर रखा था। उनके यहा भी पद्माकर ने शृंगार और वीर रस की रचनायें की। वीर रस की कविताओ के दो-एक उदाहरण देखिये—

भुवन धुंधुरित धूरि, धूरि धुंधरित सु धूमहु।
पद्माकर परतच्छ स्वच्छ लखि परति न भूमहु॥
भग्गत अति परि पग्ग, मग्ग लग्गत अंग अंगन।
तँह प्रताप पृथिपाल ख्याल खेलत खुलि खग्गन॥
तहँ तबहि तोपि तुंगन तड़पि—
तंतड़ान तेगन तड़कि।
भुकि धड़-धड़-धड़-धड़-धड़ा-धड़,
धड़ धड़ात तद्दा धड़कि॥

पुनश्च— ज्वालातें जहरतें फनिन्द फूतकारनु तें,
बाडव की बाढ़ हूते विषम घनेरो है।
कहै पद्माकर प्रतापसिंह महाराज !
ऐसो कछू गालिब गुनाहिन पै हेरो है॥
चक्र हूतें चिल्लनतें प्रलै की बिजुल्लिन तें,
जम तुल्य जिल्लन तें जगत उजेरो है।
काल ते कराल त्यो कहर काल काल हूतें,
गाजतें गजब्ब यो अजब्ब कोप तेरो है॥

प्रतापसिंह की मृत्यु के पश्चात ये (पद्माकर) फिर अपनी जागीर बांदा में रहने लगे और फिर जयपुर पहुंचे तो महाराज जगत सिंह गद्दी पर थे। वे स्वयं भी पिता की भांति कविता के परम अनुरागी तथा कविता सीखने के जिज्ञासु थे किन्तु राज्य सुखोपभोग में

पद्माकर की सफलता का सर्वोपरि प्रमाण यह है कि इनकी काव्य-शैली का कितने ही कवियों ने अनुकरण किया। उदाहरणार्थ ग्वाल ने इनकी गङ्गा लहरी को देख यमुना लहरी का निर्माण किया। अनेक छोटे कवियो ने भी इनकी शैली को अपनाया, जिनका उल्लेख यहाँ स्थानाभाव से उचित नही। केवल ला० जगन्नाथदास रत्नाकर का नाम विशेष उल्लेखनीय है, जिन्होने "गङ्गावतरण" तथा "उद्धव-शतक" की रचना पद्माकर की शैली को ही अपनाकर की और हिन्दी के ब्रज भाषा कवियों में अत्युत्तम स्थान पाने की सामर्थ्य दिखलाई।

जगद्विनोद
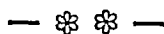
❋ मङ्गलाचरण ❋

सिद्धि-सदन सुन्दर वदन, नदनंदन मुद मूल ।
रसिक-शिरोमणि साँवरे, सदा रहहु अनुकूल ।।१।।
जय-जय शक्ति शिलामयी, जय-जय गढ आमेर ।
जय-जय पुर सुरपुर सदृश, जो जाहिर चहुँ फेर ।।२।।
जय-जय जाहिर जगतपति, जगत सिंह नर नाह ।
श्री प्रताप नदन वली, रविवशी कछवाह ।।३।।
जगतसिंह नर-नाह को, समुझि सबन को ईश ।
कवि 'पदमाकर' देत है, कवित बनाय असीश ।।४।।

कवित्त

छत्रिन के छत्र छत्रधारिन के छत्रपति,
छाजत छटान छिति छेम के छतैया हो ।
कहै 'पदमाकर' प्रभाव के प्रभाव कर,
दया के दरियाव हिन्दू हद्द के रखैया हो ।।
जागते जगतसिंह साहब सवाई श्री—
प्रताप नृप नद कुलचद रघुरैया हो ।
आछे रहो राज-राज राजन के महाराज,
कच्छ-कुल-कलस हमारे तो कन्हैया हो ।।

उदाहरण—कवित्त

शोभित स्वकीय गन गुन गनती में तहा,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहै 'पद्माकर' पगी यो पति-प्रेम ही में,
पद्मिनि तोसी तिया तू ही पेखियतु है॥
सुवरन रूप वैसो तैसो शील सौरभ है,
ताही ते तिहारो तनु घनि लेखियतु है।
सोने में सुगंध नाहि, गन्ध में सुन्यो न सोनो,
सोनो औ सुगन्ध तोमें दोनों देखियतु है॥

दोहा

खान - पान पीछू करति, सोवति पहले छोर।
प्राण-पियारे ते प्रथम, जगति भावती भोर॥
एक स्वकीया की कही, कविन अवस्था तीन।
मुग्धा इक मध्या कहत, पुनि प्रौढा परवीन॥

मुग्धा-लक्षण

झलकत आवे तरुनई, नई जासु अँग-अग।
मुग्धा तासो कहत हैं, जे प्रवीन रस-रग॥

उदाहरण

ये अलि या वलिके अधरान में, आनि चढी कछु माधुरई सी।
ज्यो 'पद्माकर' माधुरी त्यो कुच दोउन की चढती उनई सी॥
ज्यों कुच त्योंई नितम्ब चढे कछु, ज्योंई नितम्व त्यो चातुरई सी।
जानी न ऐसी चढा-चढी में, किहिधों कटि बीच ही लूटि लई सी॥

दोहा

कछु गजपति के माहटन, छिन-छिन छीजत सेर।
निघु विराम विकसित कमल, कछू दिनन के फेर॥

पल - पल पर पलटन लगे, जाके अङ्ग अनूप ।
ऐसी इक अजबाल को, को कहि सकत सरूप ।।
यह अनुमान प्रमानियतु, तिय - तन जोवन-जोति ।
ज्यो मेंहदी के पात में, अलख ललाई होति ।।
मुग्धा द्विविध वखानहीं, प्रथम कही अज्ञात ।
ज्ञातयौवना दूसरी, भाखत मति अवदात ।।
जब यौवन को आगमन, जानि परत नहिं जाहि ।
सो अज्ञात यौवन तिया, भाखत सुकवि सराहि ।।

अज्ञात यौवना

ये अलि हमें तो वात गात की न जानि परे ?
बूझति न काहे यामें कौन कठिनाई है ।
कहै 'पद्माकर' -क्यो कुच ना समात आंगो ?
लागी काहू तोहि जागी उर में उंचाई है ।।
तुव तजि पायन चली है चचलाई कित ?
बावरी बिलोके क्यो न आंखिन में आई है ।
मेरी कटि मेरी भट्टू कौन धो चुराई ? तेरे—
कुच न चुराई के नितम्बन चुराई है ।।

पुनश्च सवैया

स्वेद को भेद न कोऊ कहै, व्रत आंखिन ते अंसुवान को नारो ।
त्यो 'पद्माकर' देखती हो, तनको तन-कप न जात सँभारो ।।
ह्वै धों कहा को कहा गयो यो दिन द्वै कही ते कछु ख्याल हमारो ।
कानन में बसी बांसुरी की धुनि, प्रानन में बस्यो बांसुरी वारो ।।

दोहा

कहा कहौं दुख कौन सों, मौन गहौं केहि भांति ।
घरी-घरी यह घाघरी, परत ढीलिये जाति ।।

उदाहरण—कवित्त

शोभित स्वकीय गन गुन गनती मे तहा,
तेरे नाम ही की एक रेखा रेखियतु है।
कहै 'पद्माकर' पगी यो पति-प्रेम ही में,
पद्मिनि तोसो तिया तू ही पेखियतु है॥
सुवरन रूप वैसो तैसो शील सौरभ है,
ताही ते तिहारो तनु धनि लेखियतु है।
सोने में सुगध नाहि, गन्ध में सुन्यो न सोनो,
सोनो औ सुगन्ध तोमें दोनों देखियतु है॥

दोहा

खान-पान पीछू करति, सोवति पहले छोर।
प्राण-पियारे ते प्रथम, जगति भावती भोर॥
एक स्वकीया की कही, कविन अवस्था तीन।
मुग्धा इक मध्या कहत, पुनि प्रौढा परवीन॥

मुग्धा-लक्षण

झलकत आवै तरुनई, नई जासु अंग-अग।
मुग्धा तासो कहत हैं, जे प्रवीन रस-रग॥

उदाहरण

ये अलि या वलिके अधरान में, आनि चढी कछु माधुरई सी।
ज्यो 'पद्माकर' माधुरी त्यो कुच दोउन की चढती उनई सी॥
ज्यों कुच त्योंई नितम्ब चढे कछु, ज्योंई नितम्ब त्यो चातुरई सी।
जानी न ऐसी चढा-चढी में, किहिधौं कटि बीच ही लूटि लई सी॥

दोहा

कछु गजपति के माहटन, छिन-छिन छीजत छोर।
त्रिघु विथाम विकसित कमल, कछू दिनन के फेर॥

पल - पल पर पलटन लगे, जाके अङ्ग अनूप ।
ऐसी इक ब्रजबाल को, को कहि सकत सरूप ॥
यह अनुमान प्रमानियतु, तिय - तन जोवन-जोति ।
ज्यो मेंहदी के पात में, अलख ललाई होति ॥
मुग्धा द्विविध बखानही, प्रथम कही अज्ञात ।
ज्ञातयौवना दूसरी, भाखत मति अवदात ॥
जब यौवन को आगमन, जानि परत नहिं जाहि ।
सो अज्ञात यौवन तिया, भाखत सुकवि सराहि ॥

अज्ञात यौवना

ये अलि हमें तौ वात गात की न जानि परे ?
बूझति न काहे यामें कौन कठिनाई है ।
कहे 'पद्माकर' -क्यो कुच ना समात आंगी ?
लागी काह तोहि जागी उर में उँचाई है ॥
तुव तजि पायन चली है चचलाई कित ?
बावरी बिलोके क्यो न आंखिन मे आई है ।
मेरी कटि मेरी भट्ट कौन धौं चुराई ? तेरे—
कुच न चुराई के नितम्बन चुराई है ॥

पुनश्च सवैया

स्वेद को भेद न कोऊ कहै, व्रत आंखिन तें अंसुवान को नारो ।
त्यों 'पद्माकर' देखती हो, तनको तन-कप न जात सँभारो ॥
ह्वै धौं कहा को कहा गयो यो दिन द्वै कही ते कछु स्याल हमारो ।
कानन में बसी बांसुरी की धुनि, प्रानन में बस्यो बांसुरी वारो ॥

दोहा

कहा कहौं दुख कौन सो, मौन गहौं केहि भाति ।
घरी-घरी यह घाघरी, परत ढीलियै जाति ॥

उर उकसोहैं उरज लखि, धरति क्यो न धनि धीर ।
इनहिं विलोकि विलोकियत, सौतिन के उर पीर ॥

ज्ञात-यौवना

तन में यौवन आगमन, जाहिर जब जिहि होत ।
ज्ञातयौवना नायिका, ताहि कहत कवि गोत ॥

चौक में चौकी जराव जरी, तिहि पै खरी बार बगारत सौंधे ।
छोरि धरी हरी कंचुकी न्हान को, अंगन ते जगै ज्योति के कौंधे ॥
छाई उरोजन की छवि यों, 'पद्माकर' देखत ही चकचौंधे ।
नाजि गई लरिकाई मनो, लरिके करिके दुहुँ दुंदुभि औंधे ॥

पुनश्च

ये वृषभानु किशोरी भई, इतहू वह नन्दकिशोर कहावै ।
त्यों 'पदमाकर' दोउन पै, नयरंग तरंग अनंग कि छावै ॥
दौरे दुहूँ दुरि देखिवे को, द्युति देह दुहूँ की दुहूँन को भावै ।
ह्यां इनके रस भीजत त्यों, दृग, ह्वै उनक मसि भीजत आवै ॥

दोहा

आजु कालिह दिन द्वैकते, भई और ही भाँति ।
उरज उचौहन दै उरू, तनु तकि तिया अन्हाति ॥

नवोढ़ा-लक्षण

अति डर ते अति लाज ते, जो न चहै रति बाम ।
त्यहि मुग्धा को कहत हैं, सुकवि नवोढ़ा नाम ॥

उदाहरण

गाजि रही उनकी छवि सो दुनकी दुरि देखत ही फुनवारी ।
त्यों 'पदमाकर' बोले हँसे, इनमें विनमें मुखचंद उजारी ॥
तैसे समय कहूँ चातक की धुनि, कान परी उरपी वह प्यारी ।
चौंकि चकी चमकी चितमें, मुख ह्वै रही चपल चारी ॥

दोहा

तिय देख्यो पिय स्वप्न मे, गहत आपनी बाह ।
नहीं, नही कहि जगि भजी, यदपि नही ढिग नाह ॥

विस्रब्ध-नवोढ़ा

पति सो कछु परतीति उर, धरै नवोढा नारि ।
सो विस्रब्ध - नवोढ़ तिय, बरनत विबुध विचारि ॥

उदाहरण

जाहि न चाह कहूँ रति की, सु कछू पति को पतियान लगी है ।
त्यो 'पद्माकर' आनन में रुचि, कानन भौंह कमान लगी है ॥
देति तिया न छुवै छतिया, बतियान में तो मुसिकान लगी है ।
प्रीतमै पान खवाइबे को, परजंक के पास लो जान लगी है ॥

दोहा

दूरिहि ते दृग दै रहति, कहति कछू नहि बात ।
छिनक छबीले को सुतिय, छुवन देति क्यो गात ॥

मध्या-लक्षण—दोहा

इक समान जब है रहत, लाज मदन ये दोइ ।
जा तिय के तन में तबहि, मध्या कहिये सोइ ॥

उदाहरण

आई जु चालि गुपाल घरै, उज्वाल विसाल मृणाल-सी बाही ।
त्यो 'पद्माकर' मूरति मैं, रति छू न सकै कितहूँ परछाहीं ॥
सोभित शम्भु मनो उर ऊपर, मौज मनोभव की मन माहीं ।
लाज विराज रही अँखियान मे, प्रान मे कान्ह जवान मे नाहीं ॥

दोहा

मदन लाज वस तिय नयन, देखत बनत इकंत ।
इंचे-खिंचे इत उत फिरत, ज्यो दुनारि के कंत ॥

प्रौढ़ा लक्षण

ललित लाज कछु मदन बहु, सकल केलि की खानि ।
प्रौढ़ा ताही सों कहत सुकविन की मति मानि ॥

उदाहरण

रति विपरीति रची दम्पति गुपति अति,
मेरे जान मान भय मनमथ नेजे तें ।
कहैं 'पद्माकर' पगी यों रस-रंग जा में,
खुलिगे सु अङ्ग सब रंगन अमेजे तें ॥
नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुच्चन पै,
पर्यो है टूटि ललित ललाट के मजेजे तें ।
मानो गिर्यो हेमगिरि शृङ्ग पै मुकेलि करि,
कढि कें कलंक कलानिधि के करेजे तें ॥

दोहा

तिय तन लाज मनोज की, यों भव दशा दिखाति ।
ज्यों हिमंत ऋतु में सदा, घटत-बढत दिन राति ॥

प्रौढ़ा के भेद

प्रौढ़ा द्विविध बखानहीं, रति प्रीता इक बाम ।
आनंद इक सम्मोहिता, लक्षण इनके नाम ॥

रति-प्रीता—उदाहरण

लै पट प्रीतम के पहरै, पहराइ पियैं चुनि चूनरि खासी ।
त्यों 'पद्माकर' साझ ही ते, सिगरी निसि केलि कला परकासी ॥
फूलन फूल गुलाबन के, चटकाहट चौंकि चकी चपला सी ।
कान्ह के कानन आंगुरी नाइ, रही लपटाइ लवंग लता-सी ॥

आनंद-सम्मोहा लक्षण

करति केलि पिय हिय लगी, कोक कलनि अवरेखि ।
विमुद कुमुद सी ह्वै रही, चंद मंद दुति देखि ॥

उदाहरण

रीति रची विपरीत रची रति, प्रीतम संग अनग भरी में ।
त्यो 'पद्माकर' टूटे हरा ते सरासर सेज परी सिगरी में ॥
यो करि केलि विमोहित ह्वै रही, आनँद की सुघरी उघरी में ।
नीवी सौ बार सँभारिबे की, सुमई सुधि नारि को चारि घरी में ॥

दूसरा

भाल पै लाल गुलाल गुलाव सो, गेरि गरे गजरा अलवेलो ।
यो वनि वानिक सों पद्माकर, आये जु खेलन फाग तौ खेलौ ॥
पै इक या छवि देखिवे के लिये, मो विनती कै न भोरिन भेलो ।
राउर रग रँगी अँखियान में, ए वलवीर ! अवीर न मेलौ ॥

दोहा

जो जिय में सो जीभ में, रमन रावरे ठौर ।
आजु कालिह के नरन के, जीभ कछू जिय और ॥

मध्या अधीरा-लक्षण

करै अनादर कत को, प्रकट जनावे कोप ।
मध्य अधीरा नायिका, ताहि कहत करि चोप ॥

उदाहरण

भूले से, भ्रमे से काहि सोचत छमे से अकु—
लाने से विकाने से ठगे से ठीक ठाये हो ।
कहै पदमाकर सुगोरे रग वोरे दृग
योरे थोरे अजवकुसुंभी करि लाये हो ॥
आगे को धरत पर पीछे को परत पग,
भोर ही ते आजु कछु और छवि छाये हो ।
कहां आये, तेरे धाम, कौन काम, घर जानि,
तहां जाउ, कहां ? जहां मन धरि आये हो ॥

दोहा

दाहक नाहक नाह मोहि, करिहौ कहा मनाइ ।
सुभ्रम भये जा तीय के, ताके परसहु पाइ ॥

मध्याऽधीरा धीर नायिका लक्षण—दोहा

धीर वचन कहिकैं जुतिय, रोइ जनावे रोष ।
मध्याऽधीराधीर तिय, ताहि कहत निर्दोष ॥

उदाहरण

ए बलि कहौ हौ किन, का कहत कंत अरी,
रोषतजि, रोष कै कियौ मैं का अचाहे को ।
कहै पदमाकर यहै तो दुख दूरि करौ,
दोष न कछू है तुम्हे नेह निरवाहे को ॥
तौ पै इत रोवति कहा हौ कहौ कौन आगे,
मेरे ई जु आगे पिये आसुन उमाहे को ।
को हौं मैं तिहारी ? तू तो मेरी प्राण प्यारी,
आजु होती जो पियारी तब रोती कहौ काहे को ॥

दोहा

करि आदर तिय पीय को, देखि दृगन अनखानि ।
मुमुख मोरि बरसन लगी, लै उमाग अँसुवानि ॥

प्रौढा धीरा लक्षण

उर उदास रतिते रहै, अति आदर की खानि ।
प्रौढा धीरा नायिका, ताहि लीजिए जानि ॥

उदाहरण

नगर मगर दुति दूनी केलि मंदिर में,
बगर बगर धूप अगर बगार्‌यौ तू ।

कहै पद्माकर त्यों चदते चटकदार,
चु वन में चारु मुख चद अनुसार्‌यो तू ॥
नैनन में बैनन में सखी और सैनन में,
जहाँ देखो, तहाँ प्रेम पूरन पसार्‌यो तू ।
छपत छपाये तऊ छल न छबीली अब,
उर लगिवे की वार हार ना उतारयो तू ॥

दोहा

दरस दौरि पिय-पग परसि, आदर कियो अछेह ।
देह गेह पति जानिगो, निरखि चौगुनो नेह ॥

प्रौढा अधीरा लक्षण

कछु तरजन ताडन कछू, करि जु जनावै रोप ।
प्रौढ अधीरा नायिका, निरखि नाह को दोप ॥

उदाहरण

रोस करि पकरि परोसते लियाई घर,
पीको प्राण प्यारी भुज लतन भरै भरै ।
कहै पद्माकर ए ऐसौ दोस कीजै फेरि,
सखिन समीप यो सुनावत खरे खरे ॥
प्यो छल छपावै वात हसि बतरावै तिय,
गदगद कठ दृग आँसुन भरै भरै ।
ऐसी धन धन्य धनी धन्य है सुऐसो जाहि,
फूल की छरी सो खरी हनति हरै हरै ॥

दोहा

नेह तरेरे दृगन ही, राखत क्यो न अँगोट ।
छैल छबीले पै कहा, करति कमल की चोट ॥

प्रौढा धीरा-अधीरा लक्षण—दोहा

रति ते रूखी ह्वै जहा, डर जु दिखावै वाम।
प्रौढा धीर अधीर तिय, ताहि कहत रस धाम॥

उदाहरण

छवि छलकन भरी पीक पलकन त्यों ही,
श्रम जलकन अलकन अधिकाने च्वै।
कहै पदमाकर सुजान रूप खानि तिया,
ताहि तकि रही ताहि आपुहि अजानें ह्वै॥
परसत गात मन भावन को भावती की,
चढि गईं भौहैं रही ऐसी उपमानें छ्वै।
मानो अरविन्दन पै चन्द को चढाय दीनी,
मान कमनैत बिन्नु रोदा की कमानें द्वै॥

दोहा

अनत रमे पति की सुरति, गहि गहि गहकि गुनाह।
दृग मरोरि मुख मोरि तिय, छुअन देति नहि छांह॥

ज्येष्ठ-कनिष्ठा-लक्षण

वनरत ज्येष्ठ कनिष्ठिका, जहँ व्याही तिय दोइ।
तिय प्यारी जेठा कही, अति प्यारी लघु सोइ॥

उदाहरण

दोऊ छवि छाजतीं छबीली मिलि आसन पै,
जिनहि विलोकि रह्यो जात न जितै जितै।
कहै पदमाकर पिछौहैं आइ आदर सो,
छलिया छबीलो छैल यासर बितै-बितै॥
मूंदे तहाँ एक अलबेली के अनौखे दृग,
सुदृग मिचाउनी के ख्यालन हितै- हितै।

नेंसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्न दूसरी को,
औचक अचूक मुख चूमत चितै-चितै ।।

दोहा

जल विहार पिय-प्यारि को, देखति क्यो न सहेलि ।
लै चुभकी तजि एक तिय, करत एक सो केलि ।।

।। इति–स्वकीया ।।

परकीया-लक्षण

दोहा

होइ जो तिय पर पुरुष रत, परकीया सो वाम ।
ऊढा प्रथम बखानहीं, बहुरि अनूढा नाम ॥

ऊढ़ा-लक्षण

जो व्याही तिय और को, करत और सो प्रीति ।
ऊढा ताको कहत हैं, हिये राखि रस रीति ॥

उदाहरण

गोकुल के, कुल के, गली के गोप गाँवन के,
जो लगि कछू को कछू भारत भनै नही ।
कहै पद्माकर परोस पिछवारन ते,
द्वारन ते दौरि गुन औगुन गनै नहीं ॥
तौ लौं चलि चातुर सहेली आय कोऊ कहूँ,
नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नही ।
हौं तो स्याम रग में चुराइ चित चोरा चोरी,
बोरन तो बोर्यो पै निचोरत बनै नही ॥

अनूढ़ा-लक्षण—दोहा

चढी हिंडोरे हरषि हिय, सजि तिय वसन सुरग ।
तन झूलत पिय सग मे, मन झूलत हरि सग ।
अनब्याही तिय होत जहँ सरस पुरुष रस लीन ।
ताहि अनूढा कहत हैं, कवि पडित परवीन ॥

उदाहरण

जाउ नही कुल गोकुल में अरु दूनी दुहूँ दिसि दीपति जागै ।
त्यों पद्माकर जोई सुनै जहँ सो तहँ आनँद में अनुरागै ॥

एदई ऐसो कछू कर ब्योत, जु देखें अदेखिन के दृग दागें।
जामें अशङ्क ह्वै मोहन को भरिये निज अंक कलंक न लागें॥

दोहा

कुशल करें करतार तो, सकल शक सियराय।
यार यवारपन को जुपे, कहूँ ब्याहि लै जाय।

इक परकीया के कहे, षट बिधि भेद बखानि।
प्रथमहि गुप्ता जानिये, बहुरि विदग्धा मानि॥

ललित लक्षिता तीसरी, चौथी कुलटा होइ।
पंचई मुदिता षष्ठई, है अनुशयना सोइ॥

कही जु गुप्ता तीनि बिधि, सुकविनहूँ समुझाइ।
भूत सुरति सगोपना, प्रथम भेद यह आइ॥

वर्तमान रति गोपना, भेद दूसरो जान।
पुनि भविष्यरति गोपना, लच्छन नाम प्रमान॥

भूतसुरतिसंगोपना का उदाहरण—कवित्त

आली हों गई ही आज भूलि बरसाने कहूँ,
तापे तू परे है पदमाकर तनैनी क्यों।
ब्रजबनिता वै बनितान पै रची है फाग,
तिनमें में जु ऊधमिनि राधा मृगनैनी यों॥
घोरि डारी केसर सुबेसर विलोरि डारी,
बोरि डारी चूनरि चुचात रँग नैनी ज्यों।
मोहि झकझोरि डारी कंचुकी मरोरि डारी,
तोरि डारी कसनि बिथोरि डारी बेनी त्यों॥

दोहा

छुटत कम्प नहिं रैनदिन, विदित विदारति काय ।
अति सीतल हेमन्त की, अरी जरी यह वाय ॥

वर्तमान सुरतिगोपना का उदाहरण—सवैया

ऊधम ऐसो मच्यो ब्रज में सब रंग तरंग उमंगनि सीचें ।
त्यो पदमाकर छज्जनि छातनि छ्वै छिति छाजती केसर कीचें ॥
दै पिचकी भजी भीजी तहाँ परे पीछे गुपाल गुलाल उलीचें ।
एकही संग इहाँ रपटे सखी ए भये ऊपर मैं भई नीचें ॥

दोहा

चढ़त घाट विचल्यो सुपग, भरी आन इन अङ्क ।
ताहि कहा तुम तक रही, यामे कौन कलङ्क ॥

भविष्य-सुरति गोपना-कवित्त

आजु ते न जैहौं दधि वेचन दुहाई खाउँ,
भैया की कन्हैया उत ठाढोई रहत है ।
कहे पद्माकर त्यो साँकरी गली है अति,
इत उत भाजिवे को दाँउ ना लगत है ॥
दौरि दधि दान काज ऐसो अमनैक तहाँ,
आली वनमाली आइ वहियाँ गहत है ।
भादौं सुदी चौथ को लख्योरी मृग अङ्क याते,
झूठहू कलङ्क मोहिं लागिवो चहत है ॥

दोहा

कोऊ कछू अब काहुपै, मति लगाइये दोप ।
होन लग्यो ब्रज-गलिन में, हरिहारिन को घोष ॥

द्विविध विदग्धा जानिये, वचन विदग्धा एक।
क्रिया-विदग्धा दूसरी, भाषत विदित विवेक॥

वचन विदग्धा लक्षण

वचनन की रचनानि सो, जो साधै निज काज।
वचन-विदग्धा नायिका, ताहि कहत कविराज॥

वचन-विदग्धा का उदाहरण

(१)

जबलौं घर को धनी आवै घरै, तबलौं तो कछू चित दैबो करो।
पद्माकर ये बछरा अपने, बछरान के संग चरैबो करो॥
नित औरन के घरते हम सौं, तुम दूनी दुहावनी लैबो करो।
नित साझ सवेरे हमारी हहा, हरि गैया भला दुहि जैबो करो॥

(२)

पिय पागे परोसिन के रस में, बस मे न कहूँ बस मेरे रहैं।
पद्माकर पाहुनी सी नँदनो, निसि नीद नहीं अवसेरे रहैं॥
दुख और मै कासों कहौं को सुनै, ब्रज की वनिता दृग फेरे रहैं।
न सखी घर सांझ सवेरे रहैं, घनस्याम घरी घरी घेरे रहैं॥

क्रिया-विदग्धा

कल करील की कुंज में, रह्यो अरुझि मो चीर।
ए बलवीर अहीर के, हरत क्यो न ए पीर॥

कनकलता, श्रीफल फरी, रही विजन वन फूलि।
ताहि तजत क्यो बावरे, अरे मधुप मति भूलि॥

जो तिय साधै काज निज, करै क्रिया अनुमानि।
क्रिया विदग्धा नायिका, ताहि लीजिये जानि॥

उदाहरण

वंजुल निकुंजन में मंजुल महल मध्य,
मोतिन की झालरि किनारिन के कुरविन्द ।
आइगे तहाँई पदमाकर पियारे कान्ह,
आनिजुरि गये त्यों चवाइन के नीके वृन्द ॥
बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरग कैसी,
पीठि दै प्रवीनी दृग दृगन मिलै अनद ।
आछे अवलोकि रही आये रस मंदिर में,
इन्दीवर सुन्दर गुविन्द को मुखारविन्द ॥

लक्षिता-लक्षण

करि गुलाल सो घुंघुरित सकल ग्वालिनी वाल ।
रोरी मीडन के सुमिस, गोरी गह्यो गुपाल ॥

जा तिय को जिय आन रत, जानि कहे तिय आन ।
ताहि लक्षिता कहत हैं, जो कवि कला निधान ॥

उदाहरण—(१)

व्रज मण्डली देखि सबै पद्माकर, ह्वै रही यो चुपचाप री है ।
मनमोहन की बहिया में छुटी उपटी यह वेंनी दिखा परी है ॥
मकराकृत कुण्डल की झलकें, इतहू भुज मूल पै छापरी है ।
इनकी उनसों जु लगीं अँखियां, कहिये तो कहू हमें का परी है ॥

(२)

बीतिवे ही सुनौ बीति चुकी, अब आंजति हो किहि काज लुकंजन ।
त्यों पदमाकर हाल कहै मति लाल करौ दृग ख्याल के खंजन ॥
देखत कंचुकी कैंचुकी के विच, होत छिपाये कहा कुच कंजन ।
तोहि कलंक लगाइबे को लग्यो कान्हहि के अधरान में अंजन ॥

दोहा

घर न कंत हेमन्त ऋतु, राति जागती जात।
दुबकि द्यौस सोवन लगी, भली नहीं यह बात ॥

कुलटा लक्षण

है बहु लोगन सों जु तिय, राखति रति की चाह।
कुलटा ताहि बखानहीं, जे प्रवीन के नाह ॥

उदाहरण

यो अलबेली अकेली कहूँ, सुकुमारि शृङ्गारन कै चली कैं चली।
त्यों पदमाकर एकन के उर में रस बीजन व्वै चली व्वै चली ॥
एकन सो बतराइ कछू छिन एकन को मन लै चली लै चली।
एकन को तकि घूंघट में, मुखमोरि कनैखिन दै चली दै चली ॥

मुदिता—लक्षण—दोहा

विपिन बाग वीथी जहा, प्रबल पुरुष मय ग्राम।
काम कलित बलि काम को, तहा तनिक विश्राम ॥

सुनत लखत चित चाह की, बात घात अभिराम।
मुदित होइ जो नायिका, ताको मुदिता नाम ॥

उदाहरण

वृन्दावन वीथिन विलोकन गई ही जहां,
राजत रसाल वन तालरु तमाल को।
कहै पदमाकर निहारत बन्यों ई जहा,
नेहिन को नेह प्रेम अद्भुत ख्याल को ॥
दूनो दूनों दाढत सुपूनो निशा में अहो,
आनंद अनूप रूप काहु अलबाल को।
कुज ते कहूँ को सुनि कन्त को गमन लखि,
आगमन तैसो मन हरन गुपाल को ॥

गणिका—उदाहरण

आरन सो आरत सम्हारन न सीस पट,
गजब गुजारत गरीबन की धार पर।
कहैं पद्माकर सुगन्ध सरसावै सुचि,
बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर॥
छाजत छबीली छिति छहरि छरा की छोर,
भोर उठि आई केलि मंदिर के द्वार पर।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे,
एक कर कंज एक कर है किवार पर॥

दोहा

तन सुवरन सुवरन वसन, सुवरन उकति उछाह।
धनि सुवरन मय ह्वै रही, सुवरन ही की चाह॥

× × ×

प्रथम कही जे नायिका, ते सब त्रिविध विचारि।
अन्य सुरति दुखिता सु इक, मानवती पुनि नारि॥
फिरि वक्रोकति गर्विता, यह विधि भिन्न प्रकार।
तिनके लक्षण लक्ष सब, भाखत मति अनुसार॥

अन्य सुरति दुखिता—लक्षण

प्रीतम प्रीति प्रतीति जो, और तिया तन पाइ।
दुखित होइ सो जानिये, अन्य सुरति दुखिताइ॥

उदाहरण—अन्य सुरति दुखिता

बोलत न काहे एरी? पूछे बिन बोलो कहा,
पूछति हो, कहा भई खेद अधिकाई है?
कहै पद्माकर सुमारग गये धाये,
साची कहु मोसों आज कहा गई आई है?

गई आई हौं तो पास सावरे के, कौने काज ?
तेरे लिये ल्यावन सु तेरियै दुहाई है।
काहे ते न ल्याई फिरि मोहन विहारीजू को,
कैसे वाहि ल्याऊँ ? जैसे वाको मन ल्याई है।

पुनश्च

धोइ गई केसर कपोल कुच गोलन की,
पीक लीक अधर अमोलन लगाई है।
कहै पद्माकर त्यो नयन निरजन मे,
तजत न कप देह पुलकन छाई है॥
वाद मति ठानै झूँठ-वादिनि भई री अव,
दूतिपनो छोड घूतपन में सुहाई है।
आई तोहि पीर न पराई महा पापिनी तू,
पापीलौं गईं ही कहूँ वापी न्हाइ आई है॥

मानिनी लक्षण

खान, पान, शय्या-शयन, जासु भरोसे आइ।
करै जु छल अलि आपु सो, तासो कहा वसाइ॥
पिय सौं करै जु मान तिय, वहै मानिनी जान।
ताको कहत उदाहरण, दोहा कवित बखान॥

उदाहरण

मोहि तुम्हे न उन्हें न इन्हें मनभावती को सु मनावन ऐ है।
त्यो पद्माकर मोरन को सुनि सोर कहौ नहिं को अकुलैहै॥
घोर घरो किन मेरे गुविन्द, घरी इक में जु घटा घहरै है।
आपुहिते तजि मान तिया, हरुवै हरुवै गरुवै लगि जैहै॥

दोहा

और तजे तौर हू तजे, भूषण अमल अमोल।
तजन कह्यो न सुहाग में, अंजन तिलक तमोल॥

× × ×

वह वक्रोकति गर्विता, द्विविध कहत रसधाम।
प्रेम गर्विता एक पुनि, रूप गर्विता नाम॥

कर प्रेम को गर्व जो, प्रेम गर्विता नारि।
रूप गर्विता होत वह, रूप गर्व को धारि॥

प्रेम गर्विता— उदाहरण

मो बिनु माइ न खाइ कछू, पद्माकर त्यो भई नारि अचेत है।
धीग्न आइ लिवाइवे को, तिनकी मृदुवानि हू मानि न लेत है॥
प्रीतम को समुझावति क्यो नहीं, ये सखी तू जु पै राखति हेत है।
और तो मोहि सबै सुखरी दुखरी यहै माइकै जानि न देत है॥

पुनश्च

हौं अलि आजु बडे तडके भरिकै घट गोरस को पग धारो।
त्यो कबको धौं खर्योरी हुतो, पदमाकर मो हित मोहनी वारो॥
साँकरी खोर में काकरी की झरि चोट चल्यौ फिरि लौटि निहारो।
ता छिन ते इन आँखिन तें न कढ़्यो वह माखन चाखन हारो॥

रूप गर्विता-लक्षण

कछु न खाति अनखाति अति, विरह वरी विललाति।
अगे सयानी सौति की, विपति कही नहि जाति॥

उदाहरण

है नहीं माइको मेरी मद्द भह सासुरो है मवकी सहिवो करो।
त्यो पदमाकर पाइ सहाग, सदा सखियान ह को चहिवो करो॥

नेह भरी बतियां कहिकें नित सौतिन की छतियां दहिबो करो।
चन्द्रमुखी कह होति दुखी तो न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करो।

दोहा

निरखि नैंन मृग मीन सो, उठी सबै मिलि भाखि।
पर घर जाय गमाइ रिस, हौं आई रस राखि॥

दश–नायिका–वर्णन

प्रोषित-पतिका, खण्डिता, कलहान्तरिता होय।
विप्रलब्ध, उत्कण्ठिता, वासक-सज्जा सोय॥

स्वाधिन-पतिका हू कहत, अभिसारिका बखानि।
प्रगट प्रवत्स्यत् प्रेयसी, आगत-पतिका जानि॥

ये सब दस विधि नायिका, कविन कही निरधारि।
तिन के लक्षण लक्ष्य सब, क्रमते कहत विचारि॥

प्रोषित पतिका–लक्षण

पिय जाको परदेश में, प्रोषित पतिका सोइ।
उदित उदीपन ते जुतन, सन्तापित नित होइ॥

मुग्धा प्रोषित पतिका–उदाहरण

मानि सिख नौ दिन की न्यौतिगे गोविन्द तिय,
सौ दिन समान छिन मानि अकुलावै है।

कहै पद्माकर छपाकर छपाकर तें,
वदन छपाकर मलीन मुरझावें है ॥
बूझत जु कोऊ फैं कहा री भयो तोहि तव,
औरही को और कछु भेद न बतावें है ।
आँसू सकै मोचि न सकोच वस आलिन में,
उलही विरह वेलि दुलही दुरावें है ॥

पुनश्च

बालम के बिछुरे ब्रजबाल, को हाल कह्यो न परे कछु ह्याहीं ।
च्वैसी गई दिन तीन ही मे, तब औधि लों क्यों बचिहै छवि छांही ॥
तीर सो पीर समीर लगै, पद्माकर बूझि हू बोलति नाहीं ।
चन्द्र उदो लखि चन्द्र मुखी, मुख मन्द है पैठत मन्दिर माहीं ॥

मध्या प्रोषित पतिका—लक्षण

भरति उसासन दृग भरति, करति गेह के काज ।
पल पल पै पीरी परति, पगी लाज के राज ॥

उदाहरण

अब ह्वै है कहा अरविन्द सो आनन, इन्दु के आय हवालें पर्यो ।
पद्माकर भाषि न भाषे बनै, जिय ऐसे कछूक कसालें पर्यो ॥
इकमीन बिचारो बिध्यो बनसी, पुनि जाल के जाय दुमाले पर्यो ।
मनतो मन मोहन के सँग गो, तन लाज मनोज के पालें पर्यो ॥

पुनश्च

ऊबत हो, डूबत हो, डगत हो, डोलत हो,
बोलत न काहे प्रीति रीतिन रितै चले ।
कहै पद्माकर त्यों उससि उसासन सो,
अँसुआ अपार आइ आँखिन इतै चले ।

औधि ही के आगम लौं रहन बने तो रहो,
बीच ही क्यो वैरी बंध बेदन बितै चले ॥
ए रे मेरे प्रान कान्ह प्यारे की चला चली में,
तब तो चले न अब चाहत कितै चले ॥

प्रौढ़ा प्रोषित पतिका—लक्षण

रमन आगमन अवधिलौं, क्यो जिवायतु याहि ।
रहत कठगत आधि ये, आधी निकरत आहि ॥

उदाहरण

लागत वसत के सुपाती लिखी प्रीतम को,
प्यारी परवीन यो हमारी सुधि आनियौं ।
कहै पदमाकर इहा को न्यों हवाल विर—
हानल की ज्वाला सो दवानल ते मानियौं ॥
ऊरध उसासन को पूरो परगास सो तो,
निपट उसास पौन हू ते पहुँचानियौं ।
नैनन की ढग सो अनंग पिचकारिन ते,
गातन को रग पीरे पातन ते जानियौं ॥

परकीया प्रोषिता पतिका—लक्षण

वरसत मेह अछेह अति, अवनि रही जल पूरि ।
पथिक तऊ तुव गेहते, उठत भभूरन धूरि ॥

उदाहरण

न्योंते गये नँदलाल कहूँ सुनि, बाल विहाल वियोग की घेरी ।
ऊतरु कौन हूँ के पदमाकर, है फिरि कुंजगलीन में फेरी ॥
पावै न चैन सुमैन के वानन, होत छिनै छिन छीन घनेरी ।
बूझै जु कत कहै तो यहै तिय, पीक पिराति है पासुरी मेरी ॥

गणिका प्रोषिता पतिका—लक्षण

व्यथित वियोगिनि एक तू, यों दुख सहत न कोइ।
ननँद तिहारे कंत की, पथ विलोकति जोइ॥

उदाहरण

वीर अवीर अभीरन को दुख, भाखे बनै न बनै बिनु भाखे।
त्यो पदमाकर मोहन मीत के पाये सँदेसन आठये पाखे॥
आये आप न पाती लिखी, मनकी मनहीं में रही अभिलाखे।
सीत के अंत बसंत लग्यो, अब कौन के आगें बसंत लै राखें॥

दोहा

पग अंकुस कर में कमल, करि जु दियो करतार।
सुसखि सुफल ह्वै है तबहि, जब ऐ है घर यार॥

खंडिता—लक्षण

अनत रमे रति चिन्ह लखि, पीतम के सुभगात।
दुखित होय सो खण्डिता, बरनत मति अवदात।

मुग्धा खण्डिता—उदाहरण

बैठी परजंक पै, नवेली निरसंक जहाँ,
जागी जोति जाहिर जवाहर की जागें ज्यों।
कहै पदमाकर कहूं ते नँद नंदन हू,
औचक ही आय अलसाय प्रेम पागे यों॥
झपकौंहे पलक पिया के पीक लीक लखि,
झुकि झहराइहू न नेंकु अनुरागे त्यों।
वैसेई मयंक मुखी लागत न अंक हुंती,
देखि के कलंक अब एरी अंक लागे क्यों॥

पुनश्च—दोहा

बिन गुन माल गुपाल उर, क्यो पहरी परभात।
चकित चित्त चुप ह्वै रही, निरखि अनोखी बात॥

मध्या खण्डिता—उदाहरण

ख्याल मन माये कहूँ करिकें गुपाल घरैं,
आये अति आलम मढे ई बड़े तरके।
कहै पद्माकर निहारे गज गामिनि नें,
गज मुकतान के हिये पै हार दर के॥
एते पै न आनन ह्वै निकसे बधू के बैन,
अधर उराहनो सुदेवे काज फर के।
कन्धन ते कचुकी भुजान ते सु बाजू बन्द,
पौहचेन ते कगन हरे ही हरे सरके॥

प्रौढ़ा खण्डिता—लक्षण

रसिक राज आलस भरे, खरे दृगन की ओर।
कछुक कोप आदर कछू, करत भावती भोर॥

प्रौढा खण्डिता—उदाहरण

खाये पान बीरी सी बिलोचन बिराजैं आज,
अजन अँजाये अघ अधरा अमी के हैं।
कहै पदमाकर गुविन्द देखो आरसी लै,
अधर अमोलन पै किन पान पीके हैं॥
ऐसो अवलोकिवेई लायक मुखारविन्द,
जाहि लखिचद अरविन्द होत फीके हैं।
प्रेम रस पागि जागि आये अनुराग यातें,
अब हम जानी कै हमारे भाग नीके हैं॥

परकीया खण्डिता—लक्षण

ताकि रहति छिन और तिय, लेत और को नाउं।
ए अलि ऐसे बलम की, विविध भांति बलिजाउं॥

उदाहरण

एहो ब्रजठाकुर ठगोगी डारि कीन्ही तब,
बोरी बिनु काज अब ताकी लाज करिये।
कहै पदमाकर इते पै ये रंगीलो रूप,
देखे बिनु देखे कहो कैसे धीर धरिये॥
अजहू न लागी औ कलंकिनी कहाई यातें,
अरज हमारी एक यही अनुसरिये।
सांझ के सवेरे दिन दसयें दिवारी फाग,
कबहूं भलें जु भलें आइवो तो करिये॥

पुनश्च

सीख न मानी सयानी सखीन की, यों पदमाकर कीय मनें की।
प्रीति करी तुम सों बदिकें सु, बिसारि करी तुम प्रीति घने की॥
रावरी रीति लखी इमि सावरे, होति है सम्पति ज्यों सपने की।
साचु ही ताको न होत भलो, जो न मानत है कही चारि जने की॥

पुनश्च

साहमहू न कहू रुख आपना, भाखें बनै न बनै बिनु भाखें।
त्यों पदमाकर यो मग में, रंग देखति हों कवकी रुख राखें॥
या बिधि सावरे रावरे की न, मिलै मरजी न मजा न मजाखें।
बोलनि बानि बिलोकनि प्रीति की, वो मन वे न रही अब आंखें॥

गणिका खण्डिता—लक्षण

गन्यो न गोकुल कुल घनो, रमन रावरे हेत।
सु तुम चोरि चित चोरलों, भोर दिखाई देत॥

उदाहरण

गोश-पेंच, कुण्डल, कलगी, सिरपेच, पेच,
पेचन ते सेच विनु बेचे वारि आये हो ।
कहै पदमाकर कहाँ वो मूरि जीवन की,
जाकी पग धूरि पगरी पै पारि आये हो ॥
वेगुन के सार ऐसे वेगुन के हार अव,
मेरी मनुहारि कै वृथा ही धारि आये हो ।
पाँमासार खेली कित कौन मनुहारिन सों,
जीति मनुहारि मनु हारि हारि आये हो ॥

दोहा

वडे साहु लखि हम करी, तुमसो प्रीति विचारि ।
कहा जानि तुम करत हो, हमें और की नारि ॥

कलहान्तरिता—लक्षण

प्रथम कछू अपमान करि, पिय को फिरि पछिताय ।
कलहतरिता नायिका, ताहि कहत कविराय ॥

मुग्धा कलहान्तरिता का—उदाहरण

वारी वहू मुरझानी विलोकि, जिठानी करै उपचार किती को ।
त्यों पदमाकर ऊँची उसास, लखै मुख सास को है रह्यो फीको ॥
एक कहै इन्है डीठि लगी, पर भेद न कोऊ लहै दुलही को ।
ह्वै कै अजान जो कान्ह सो कीन्हो, गुमान भयो वहै ज्यान है जी को ॥

दोहा

प्रथम केलि तिय कलह की, कथा न कछु कहि जाय ।
अतन ताप तन ही सहै, मन ही मन अकुलाय ॥

मध्या कलहान्तरिता—उदाहरण

झालरनदार झुकि झूमत वितान विछ,
गहव गलीचा अरु गुलगुली गिल में।
जगर मगर पद्माकर सुदीपन की,
फैली जगज्योति केलि मंदिर अखिल में॥
आवत तहाँई मनमोहन को लाज भैन,
जैसी कछु करी तैसी दिल ही की दिल में।
हेरि हरि बिलमे न लीन्हो हिल मिल में,
रही हो हाय मिल में, प्रभा की झिलमिल मे॥

दोहा

ल्याओ पियहि मनाय यह, कह्यो चहति रहि जात।
कलह कहर की लहर में, परी तिया पछिताति॥

प्रौढ़ा कलहान्तरिता—उदाहरण

ए अलि इकन्त पाइ पाइन परे हे आइ,
हौं न तब हेरी या गुमान बजमारे सों।
कहे पदमाकर वे रूठिगे सु ऐसी भई,
नैनन ते नीद गई हाट के दवारे सो॥
रैन दिन चैन है न मैन है हमारे बस,
ऐन मुख सूखत उसास अनुसारे सो,
प्रानन की हानि सी दिखान सी लगी है हाय,
कौन गुन जानि मान कीन्हो प्रान प्यारे सो॥

परकीया कलहान्तरिता—दोहा

घन घमण्ड पावस निसा, सरवर लख्यो सुखान।
निरखि प्रानपति जानिगो, तज्यो मानिनी मान॥

उदाहरण

कासों कहा में कहीं दुलयो, मुख सूखतई हैं पीयूस पियें तें ।
त्यों पदमाकर यो उपहास को, श्रास मिटे न उसास लिये तें ॥
व्यापी विथा यह ब्रानि परी, मनमोहन मीत सो मान कियेतें ।
भूलिहू चूक परी जो कहूं तिहि चूक की हूक न जात हिये तें ॥

गणिका कलहान्तरिता—लक्षण

मोहन मीत सभीत गो, लखि तेरो सनमान ।
अव सु दगादे तू चल्यो, अरे मुद्दई मान ॥

उदाहरण

हीर के हार हजारन को धन, देत हुते सुख ते सरसाने ।
हों न लियो पदमाकर त्यो अरु, वोली न वोल सुधारस साने ॥
वे चलि ह्याते गये अनतै, अव का हम आपनी वात वखाने ।
आपने हाथ सो आपने पाइ पैं, पाथर पारि पर्‌यो पछिताने ॥

दोहा

कहा देखि दुख दाहिये, कुमति कछू जो कीनि ।
छैल छिगूनी छोर ते, छला न लीन्हो छीनि ॥

विप्रलब्धा—लक्षण

पिय विहीन संकेत लखि, जो तिय अति अकुलाइ ।
ताहि विप्रलब्धा कहहि, सुकविन को समुदाइ ॥

मुग्धा विप्रलब्धा—उदाहरण

खेल को बहानो कै सहेलिन के सग चलि,
आई केलि मन्दिर लों सुन्दर मजेज पर ।
कहे पदमाकर तहाँ न पिय पायो तिय
त्यो ही तन तै रही तमीपति के तेज पर ॥

कौन करै होरी कोऊ गोरी समुझावै कहा,
नागरी को राग लग्यो विष सो विराग सो।
कहर सी केसर कपूर लग्यो काल सम,
गाज सो गुलाब लग्यो अरगजा आग सो॥

दोहा

निरखि सेज रँग रँग भरी, लगी उसासैं लैन।
कछु न चैन चित मैं रह्यो, चढत चादनी रैन॥

परकीया विप्रलब्धा—उदाहरण

गुंजन सु गुंज लग्यो, तैसो पौन पुंज लग्यो,
दोस मनि कुंज लग्यो, गुंजन सों गजिकैं।
कहै पदमाकर न खोज लग्यो ख्यालन को,
घालन मनोज लग्यो वीर तीर सजि कै॥
सूखन सु बिंब लग्यो, दूखन कदंब लग्यो,
मोहिन विलंब लग्यो आई गेह तजि कैं।
मीजन मयंक लग्यो, मीत हू न अंक लग्यो,
पंक लग्यो पांयन कलंक लग्यो भजि कैं॥

दोहा

लखि संकेत सूनो सुमुखि, बोली बिकल सभीति।
कह्यो कहा केहि सुख लह्यो, करि कुमीत सो प्रीति॥

गणिका विप्रलब्धा—उदाहरण

निशि अँधियारी तऊ प्यारी परवीन चढि,
मान के मनोरथ के रथ पै चली गई।
कहे पद्माकर तहा न मनमोहन सो,
भेंट भई सटकि सहेट में भली गई॥

चदन सो चादनी मो चद सों पमेलिन मो,
मौर बन वेनिन के दमन दली गई।
आई हुती छैन के अने को छन्न छदन मो,
छैन तो छल्यो न आपु छैल मो छली गई॥

दोहा

इत न मेन मूरति मिल्यो, पग्त कौन विधि चैन।
घन की भई न धाम की, गई ऐम ही रैन॥

उत्कंठिता—उदाहरण

सोचै अनागम कारन कत को, मोचै उमासन आंसहु मोचै।
मोचै न हेरि हरा हिय को, पदमाकर मोच सकै न मंकोचै॥
कोचै तकै इहि चांदनी ते अलि, याहि निवाहि बिया अवलोचै।
लोचै परी सियरी परयंक पै बीती, घरी न खरी खरी मोचै॥

दोहा

अरे सु मो मन बावरे, इतहि कहा अकुलात।
अटकि अटा किरा पति रह्यो, तितहि क्यों न चलि जात॥

मध्या उत्का—उदाहरण

आये न कत कहा धौं रहे, भयो भोर चहै निसि जाति सिरानी।
यो पदमाकर बूझ्यो चहै पर, बूझि सकै न सकोच की सानी॥
धारि सकै न उतारि सकै, गुनि हार सिंगार हिये हहरानी।
सूल से फूल लगे फर पै, तिय फूल झगी सी परी मुरझानी॥

दोहा

अनत रहे रमि कत क्यो, यह बूझन के चाइ।
सुमुखि सखी के स्रवन सो, मुख लगाइ रहि जाइ॥

प्रौढ़ा उत्का—उदाहरण

सौतिन के त्रास तें रहे घों और वास तें,
न आये कौन गास तें प्यो करु तो तलास तें ।
कहे पदमाकर सुवास तें जवास तें,
सु फूलन की रास तें जगी है महासास तें ॥
चांदनी विकास तें सुधाकर प्रकाश तें—
न राखत हुलास तें न लाउ खसखास तें ।
पौन करु प्रास तें न जाउ उठि बास तें,
अरी गुलाब पास तें उठाइ प्रास पास तें ॥

दोहा

कियहुन में कबहूं कलह, गह्यो न कबहू मौन ।
पिय अबलौं आये न कत, भयो सुकारन कौन ॥

परकीया उत्का—उदाहरण

फागुन में का गुन विचारि ना दिखाई देत,
एती बेर लाई उन कानन में नांइ आव ।
कहै पदमाकर हितू जो है हमारी तो,
हमारे कहे वीर वहि धाम लगि धाइ आव ॥
जोरि जो धरी हैं वेदरद दुआरे होरी,
मेरी विरहागि की ललूकनि लौ लाइ आव ।
एगी इन नयनन के नीर में अबोर घोरि,
वोरि पिचकारी चित चोर पें चलाय आव ॥

दोहा

तजत गेह अरु गेहपति, मोहि न लगो बिलम्ब ।
हरि विलम्ब लाई सुकत, क्यो नहि कहत कदम्ब ॥

परकीया-वासक सज्जा—उदाहरण

सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनी है,
बूटेदार घांघरी की घूमनि घुमाय कै।
कहैं पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पै,
तग अंगिया है तनी तनिन तनाय कै॥
छज्जनि की छांह छकि छल के मिन के हेतु,
छाजती छपा में यो छबीली छबि छाय कै।
ह्वै रही खरी है छरी फूल की छरी सी छगि,
भांवरी गली में फूल पांखुरी बिछाय कै॥

दोहा

फून बिनन निस कुंज में, पहिरि गुंज के हार।
मग निरखत नंदलाल को, सुबलि बार ही बार॥

गणिका-वासक सज्जा—उदाहरण

नीर के तीर उसीर के मंदिर, धीर समीर जुडावत जी रे।
त्यों पदमाकर पंकज पुंज, पुरैन के पात परे जनि पीरे॥
ग्रीसम कौउ न गिनै गरमी, गज गोहर चाह गुलाब गँभीरे।
बैठी वधू वनि बाग विहार में, वार वगारि सिवार से सीरे॥

दोहा

अमल अमोलिक लाल मय, पहरि विभूपन भार।
हरपि हिये पर तिय धर्यो, सुरख सीप को हार॥

स्वाधीन-पतिका—लक्षण

जा तिय के आधीन ह्वै, पीतम रहे हमेस।
स्वाधिन पतिका नायिका, कही कविन के वेस॥

मुग्धा स्वाधीन पतिका—उदाहरण

चाह भरयो चंचल हमारो चित नील वधू,
तेरी चाल चंचल चितौनि में बसत है।
कहै पदमाकर सु चंचल चितौनि हू ते,
औझक उझकि झिझकनि में फंसत है॥
औझकि उझकि झझकनि ते सुरझि,
वेशबाही की गहनि माहि धाय बिलसत है॥
बाही की गहनि ते गुनाही की कहनि,
आयो नाही की कहिनते सु नाही निकसत है॥

पुनश्च

कबहू फिरि पांउ न देहौं यहा, भजि जैहौं तहां जहा सूधी सहौं।
पदमाकर देहरी द्वार किवार, लगे ललचैहो न ऐसी चहौं॥
बहियां की कहा छहियां न कहो, छुवै पावहुगे लहु लाज लहो।
चित चाहे कहो न कहो बतियां, उतही रहो हा हा हमें गहो॥

पुनश्च

सतरैबो करो बतरैबो धरो, इतरैबो करो करो जोई चहो।
पदमाकर आनँद दैबो करो, रस लेबो करो सुख सों उमहो॥
कछु अंतर राखो न राखो चहै, पर या बिनती इक मेरी गहो।
अब ज्यों हिय में नित बैठि रहो, त्यों दया करि के ढिग बैठी रहो॥

दोहा

तुव अयानपन लखि लटू, लटू भये नँदलाल।
जब सयान पन पेखि हैं, तब धौं कहा हवाल॥

मध्या स्वाधीन पतिका—उदाहरण

ता छिन ते रहै और न भूलि सु भूली कदंबन की परछाहीं।
त्यो पद्माकर ता सखान को, भूलि भुलाइ कला अवगाहीं॥

परकीया-वासक सज्जा—उदाहरण

सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनी है,
बूटेदार घांघरी की घूमनि घुमाय कै।
कहैं पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पै,
तंग अंगिया है तनी तनिन तनाय कै॥
छज्जनि की छाह छकि छल के मिन्ने के हेतु,
छाजती छपा में यों छबीली छबि छाय कै।
ह्वै रही खरी है छरी फूल की छरी सी छगि,
सांकरी गली में फूल पांखुरी बिछाय कै॥

दोहा

फून विनन निस कुँज में, पहिरि गुंज के हार।
मग निरखत नँदलाल को, सुबलि वार ही वार॥

गणिका-वासक सज्जा—उदाहरण

नीर के तीर उसीर के मंदिर, धीर समीर जुडावत जी रे।
त्यो पदमाकर पंकज पुंज, पुरैन के पात परे जनि पीरे॥
ग्रीसम कौउ न गिनै गरमी, गंज गोहर चाह गुलाब गँभीरे।
बैठी बधू वनि वाग विहार में, वार वगारि सिवार से सीरे॥

दोहा

अमल अमोलिक लाल मय, पहरि विभूषन भार।
हरषि हिये पर तिय धर्‌यो, सुरख सीप को हार॥

स्वाधीन-पतिका —लक्षण

जा तिय के आधीन ह्वै, पीतम रहै हमेस।
स्वाधिन पतिका नायिका, कही कविन के वेस॥

मुग्धा स्वाधीन पतिका—उदाहरण

चाह भरयो चचल हमारो चित नील वधू,
तेरी चाल चचल चितोनि में बनत है।
कहै पदमाकर सु चचल चितोनि हू ते,
औझक उझकि झिझकनि में फंसत है॥
औझकि उझकि झझकनि ते सु उझि,
देशबाही की गहनि मांहि आय विलसत है॥
नाही की गहनि ते गुनाही की कहनि,
आयो नाही की कहिनते सु नाही निकसत है॥

पुनश्च

कबहू फिरि पाउँ न दैहों यहा, भजि जैहों तहां जहा सूधी सहों।
पदमाकर देहरी द्वार किवार, लगे ललचैहो न ऐसी चहों॥
बहियां की कहा छहियां न कहो, छुवै पाचहुगे लहु लाज लहों।
चित चाहे कहो न कहो बतियाँ, उतही रहो हा हा हमें गहो॥

पुनश्च

सतरैबो करो बतरैबो करो, इतरैबो करो करो जोई चहो।
पदमाकर आनंद दैबो करो, रस लैबो करो मुख सों उमहो॥
कछु अतर राखो न राखो चहैं, पर या विनती इक मेरी गहो।
अब ज्यो हिय में नित बैठि रहो, त्यों दया करि के डिग बैठी रहो॥

दोहा

तुव अयानपन लखि मटू, लटू भये नँदलाल।
जब सयान पन पेखि हैं, तब धों कहा हवाल॥

मध्या स्वाधीन पतिका—उदाहरण

ता छिन तें रहै और न भूलि सु भूली कदबन की परछाहीं।
त्यों पद्माकर संग सखान को, भूलि भुलाइ कला अवगाहीं॥

जा छिन ते तू वशीकर यन्त्र सी, मेली सुकानहिं कानन माहीं।
दै गलबाहीं जु नाहीं करी, यह नाहीं गुपाल को भूलत नाहीं॥

दोहा

आधे आधे दृगन रति, आधे दृगन सु लाज।
राधे आधे वचन कहि, सुबस किये व्रजराज॥

प्रौढ़ा स्वाधीन पतिका—उदाहरण

मो मुख बीरी दई सु दई, सु रही रचि साधि सु रंग घनेरो।
त्यों पदमाकर केसरि खोरि, करी सु करी सो सुहाग है मेरो॥
बेनी गुही तो गुही मन भावति, मोतिन मांग सवांरि सवेरो।
और सिंगार सजो तो सजो, एक हार हहा हियरे मति गेरो॥

दोहा

अँगराग मोरे अँगन, करत कछू वरजी न।
पै मेंहदी न दिवाइहौं, तुम सो पगन प्रवीन॥

परकीया स्वाधीन पतिका—उदाहरण

उझकि झरोखा ह्वै झमकि झुकि झांकी वाम,
श्याम को बिसारि गई खबरि तमासा की।
कहै पदमाकर चहूधा चेति चांदनी सी,
फैलि रही तैसी ये सुगन्ध शुभ स्वासा की॥
तैसी छवि तकत तमोर की तर्‌यौनन की,
वैसी छवि बसनन की बारन की वासा की।
मोतिन की मांग की, मुखौ की, मुसिकान हूकी,
नथ की, निहारिबे की, नैनन की, नासा की॥

पुनश्च

ईसकी दुहाई सीस फूलतें लटकि लट,
लट तें लटकि लट-कुच पै ठहरिगो।

कहै पद्माकर सुमद चलि कच हू तें,
भूमि भ्रमि भाई सी,भुजा में तें भभरिगो ॥
भाई सी भुजा तें भ्रमि भायो गोरी गोरी बाह,
गोरी बाँह हू तें चपि चूरिन में अरिगो ।
हेरेउ हरेहू हरी चूरिन तें चाहो जोलौं,
तोलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगो ॥

दोहा

मैं तरुनी तुम तरुन तन, चुगुल चवाई गाँउ ।
मुरली लै न बजाइये, कबहुँ हमारो नाँउ ॥

गणिका स्वाधीन पतिका—उदाहरण

छाकि छकी छतियां धरकै, दरकै अँगियां उचकै कुच नीके ।
त्यो पदमाकर छूटत वारहु टूटत हार सिंगार जे ही के ॥
सग तिहारे न झूलहुँगी फिर, रग हिंडोरे सु जीवन के ।
यो मचकी मचको न हहा, लचकै करिहा मचके मचकी के ॥

दोहा

या जग में घनि धन्य तू, सहज सलोने गात ।
भरनी घर जो बस कियौं, कहा और की बात ॥

अभिसारिका—लक्षण

बोलि पठावै पियहि कै, पिय पे आपुहि जाय ।
ताही को अभिसारिका, वरनत कवि समुदाय ॥

मुग्धा अभिसारिका—उदाहरण

किंकनी छोरि छपाई कहूं, कहूँ बाजति पाइल पाइते नाहीं ।
त्यों पदमाकर पातहु के खरके, कहू कापि उठे छबि छाई ॥

दोहा

गई सांझते सुमुखि तू, सजि सब साज समाज ।
को अस बड भागी जु है, चली मनावन काज ।।

दिवा अभिसारिका—उदाहरण

दिन में किवार खोलि कीनो अभिसार पै न,
जानि परी काहू कहां, जाति चली छलसी ।
कहै पदमाकर न ना करी सकारे जाहि,
काकरी पगनि लगें पकज के दल सी ।।
कानन सो कामद कपूर ऐसी धूर लगे,
पद सो पहार नदी लागत हैं नल सी ।
घाम चादनी सी लगै चद सो लगत रवि,
मग मखतूल सो मही हू मखमल सी ।।

दोहा

सजि सारँग सारँग नयनि, सुन सारँग वन माहँ ।
भरि दुपहर हरि पै चली, निरखि नेह की छाहँ ।।

कृष्णा अभिसारिका—उदाहरण

सावरी सार सखी संग सांवरी, सांवरे धारि विभूषन ध्वैके ।
त्यो पदमाकर सावरे ही, अंगरागनि आंगी रची कुच द्वै के ।।
सांवरी रैनि में सावरी हैं, घहरै घन घोर घटा छिति छ्वै के ।
सांवरी पांवरी देखुही, वलि सावरे पै चली सांवरी ह्वै के ।।

दोहा

कारी निसि कारी घटा, कचरति कारे नाग ।
कारे कान्हा पै चली, अजब लगन की लाग ।।

शुक्ला अभिसारिका—उदाहरण

सजि व्रजचन्द पै चली यो मुखचद जाको,
चंद चाँदनी को मुख मन्द सो करत जात।
कहै पदमाकर त्यो सहज सुगन्ध ही के,
पुज वन कुजन मे कज से भरत जात॥
धरत जहाँ ई जहाँ पग है सुप्यारी वहाँ,
मंजुल मँजीठ ही की माट सी ढुरत जात।
हारन ते हीरे ढरै सारी के किनारन तें,
बारन तें मुकता हजारन भरत जात॥

दोहा

जुवति जुन्हाई सो न कछु, और भेद अवरेखि।
तिय आगम पिय जानि गो, चटक चाँदनी पेखि॥

प्रवत्स्यत् प्रेयसी—लक्षण

चलन चहै परदेस को, जा तिय को जब कत।
ताहि प्रवतस्यत् प्रेयसी, कहत सुकवि मति वत॥

प्रवत्स्यत पतिका—उदाहरण

सेज परी सफरी सी पलोटति, ज्यो ज्यों घटा घन की गरजै री।
त्यो पद्माकर लजनि तें न कहै दुलही हिय की हरजै री॥
आली कछू की कछू उपचार, करै पै न पाइ सकै मरजै री।
जाइ न ऐसे समै मथुरै यह, कोऊ न कान्हर को बरजै री॥

दोहा

बोलत बोल न मलि चिकल, थरथरात सब गात।
नव जोबन के आगमन, सुनि पिय गमन प्रभात॥

मध्या प्रवत्स्यत पतिका—उदाहरण

गो गृह काज गुवालिन के कहे, देखिबे को कहूँ दूरि के खेरो।
मागि विदा लइ मोहन सों, पद्माकर मोहन होत सवेरो॥
फेंट गही न गही बहियाँ, न गरो गहि गोविन्द गोन ते फेरो।
गोरी गुलाब के फूलन को, गजरा लै गुपाल को गैल में गेरो॥

दोहा

सुनि सखीन मुख ससि मुखी, बलम जाइँगे दूरि।
बूझ्यो चहति वियोगिनी, जिय ज्यावन की मूरि॥

प्रौढ़ा-प्रवत्स्यत् पतिका—उदाहरण

सो दिन को मारग तहां को बेगि मागि विदा,
प्यारो पदमाकर प्रभात राति बीते पर।
सो सुनि पियारी पिय गमन बराइबे को,
आसुन अन्हाई बैठि आसन सु तीते पर॥
बालम विदेश तुम जात हो तो जाउ परि,
सांचो कहि जाउ कब एहो मौन रीते पर।
पहर के भीतर कै दोपहर भीतर ही,
तीसरे पहर किधौं सांझ ही बितीते पर॥

पुनश्च

जात हैं तो अब जानदे री, छिन में चलिबे की न बात चलै है।
जो पदमाकर पौन के झूँकन, क्वैलिया कूकनि का सहि लैहैं॥
वे उनहैं वन बाग विहार, निहारि निहारि जबै अकुलैहै।
जै है न फेरि फिरे घर ऐहैं, सु यांउ ते बाहिर पाउ न दैहैं॥

दोहा

असन चले आंसू चले, चले मैन के बान।
रमन गमन सुनि सुख चले, चलत चलिगे प्रान॥

परकीया- प्रवत्स्यत् पतिका—उदाहरण

जो उरभारि नहीं झरती, मृदु मालती माल वहै मग नाखै ।
नेहवती जुवती पदमाकर पानी न पान कछू अभिलाखै ।।
झाकि झरोखे रही झवकी, दवकी वह वाल मनै मन भाखै ।।
कोऊ न ऐसो हितू हमरो जु परोसिन के पिय को गहि राखै ।।

दोहा

नँनद चाह सुनि चलन की, वरजति क्यों न सु कत ।
आवत वन विरहीन को, वैरी वधिक वसत ।।

गणिका-प्रवत्स्यत् पतिका—उदाहरण

आखिन के अंनुमान ही सो, निज धाम ही धाम धरा भरि जैहै ।
त्यो पदमाकर धीर समीरन जीय धनी कहु क्यों धरि जै है ।।
जो तजि मोहि चलोगे कहूँ तो इवी विरहागिनियां जरि जैहै ।
जै है कहा कछू रावरे को, हमरे हिय को तो हरा हरि जै है ।।

दोहा

फवति फाग फजिहत बड़ी, चलन चहत जदुराइ ।
को फिरि जाइ रिझाइवी, धुनि धमार को गाइ ।।

आगत पतिका—लक्षण

आवत बलम विदेस ते, हरषित होत जु वाम ।
आगत-पतिका-नायिका, ताहि कहत रसधाम ।।

मुग्धा-आवत पतिका—उदाहरण

कान सुनि आगम सुजान प्रान प्रीतम को,
आन सखियान सजी सुन्दरि के आस पास ।
कहै पदमाकर सुपन्नन के हौज भरे,
ललित लबालब भरे हैं जल वांत वास ।।

उत्तमा—उदाहरण

पाती लिखी सुमुखि सुजान पिय गोविन्द को,
श्रीयुत सलोनें श्याम सुखन सने रहौ।
कहै पदमाकर तिहारी छेम छिन-छिन,
चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ॥
विनती इती है कै हमेस ही हमें तो निज,
पायन की पूरी परचारिका गनें रहौ।
याही मे मगन मनमोहन हमारो मन,
लगनि लगाइ मन मगन बने रहौ॥

दोहा

धरति न नाह गुनाह उर, लोचन करति न लाल।
तिय पिय की छतियाँ लगी, बतिया करति रसाल॥

मध्यमा—लक्षण

पिय गुनाह चित चाह लखि, करै मान सनमान।
ताही तिय को मध्यमा, भाषत सुकवि सुजान॥

मध्यमा—उदाहरण

मन्द मन्द उर पै अनंद ही के आसुन की,
बरसै सुबूंदे मुकतान ही के दाने सी।
कहै पदमाकर प्रपची पचवान के सु
कानन के मान पै परी त्यो घोर घाने सी॥
ताजी त्रिवलीन में बिराजी छवि छाजी सबै,
राजी रोम राजी करि अमित उटाने सी।
सोहैं पेखि पीको बिहँसोहै भये दोऊ दृग,
सौहैं सुनि भौहैं गइ उतरि कमाने सी॥

पुनश्च

जाके मुख सामुहें भयोई जो चहत मुख
लीन्हो सो नवाइ डीठि पगन भवोंगी री ।
वैन सुनिवे को अति व्याकुल हते जे कान्ह,
तेऊ मूदि राखे मजा मनहू न मोंगी री ॥
झारि डार्यो पुलकि प्रसेद हू निवारि डार्यो
एक रसना हू त्यों भरी न कछु होंगी री ॥
एते पै रह्यो न मान मोहन लट्ट पै भट्ट,
टूक-टूक ह्वै कै जो छट्टक भई भोंगी री ॥

दोहा

रह्यो मान मन के मनहि, सुनत कान्ह के वैन ।
वरजि वरजि हारे तऊ, रुकै न गरजी नैन ॥

अधमा—लक्षण

ज्यो ह्वो ज्यों पिय हित करन, त्यो त्यों परति सरोस ।
ताहि कहत अधमा सुकवि, निठुराई की कोस ॥

अधमा—उदाहरण

हौं मरुझाइ रिझाइवे को, रसराग कवित्तन की धुनि छाई ।
त्यो पदमाकर साहस कै, कवहून विषाद की बात सुनाई ॥
सपनेहु कियो न कछू अपराध, सु आपने हाथन सेज बिछाई ।
प्यो परि पाँइ मनाइ जऊ तऊ पापिन को कछु पीर न आई ॥

दोहा

मान ठानि वैठी इतो, सुवस नाह निज हेरि ।
कवहुं जु परवस होइ तो, कहा करैगी फेरि ॥

॥ नायिका–निरूपण–समाप्त ॥

नायक-निरूपण

दोहा

सुदर गुन मदिर जुवा, जुवति विलोकै जाहि।
कविता राग रसज्ञ जो, नायक कहिये ताहि॥

नायक—उदाहरण

जगत वसीकरन हो हरन गोपिन को,
तरुन त्रिलोक में न तैसी सु दराई है।
कहै पदमाकर कलान को कदम्ब पन—
लम्बन सिगार को सुजान सुखदाई है॥
रसिक सिरोमनि सुराग रतनाकर है,
तीन गुन आगर उजागर वडाई है।
ठौर ठकुराई को जु ठाकुर ठसकदार,
नन्द के कन्हाई सो सुनन्द के कन्हाई है॥

दोहा

दौरै कोल विलोकिवे, रसिक रूप अभिराम।
सव सुखदायक सोंचिहू, लखिवे लायक स्याम॥

नायक के भेद—

त्रिविध सुनायक पति प्रथम, उपपति वैसिक और।
जो विधि सो व्याह्यो तियन, सोई पति सव ठौर॥

पति—उदाहरण

ण्डप ही में फिरै मॅडरात, न जात कहूं तजि नेह को भौनों।
ो पदमाकर ताहि सराहत, बात कहै जो कहूं कछु कौनो॥

ए बड़ भागिनी तोसी तूही बलि जो लखि गावरी रूप सलोनों।
ब्याह ही ते भये कान्ह लट्टू, तब ह्वै है कहा जब होयगो गोनो॥

दोहा

आई ज्ञालि सुससि-मुखी, नख सिख रूप अपार।
दिन-दिन तिय जोबन बढत, छिन-छिन पिय को प्यार॥

पति के भेद

आनुकूल दक्षिण बहुरि, सठ और धृष्ट विचारि।
कहे कविन पति एक के, भेद पेखि कै चारि॥

जो पर वनिता तें विमुख, सानुकूल सुखदानि।
जु बहु तियन को सुखद सम, सो दच्छिन गुन खानि॥

अनुकूल—उदाहरण

एक ही सेज पै सोवत हैं, पदमाकर दोऊ महा सुख साने।
सापने में तिय मान कियो, यह देखि पिया अति ही अकुलाने॥
जागि परे पै तऊ यह जानत, पौढि रही हमसों रिस ठाने।
प्रान पियारी के पा परि के करि सौंह गरे की गरे लिपटाने॥

दोहा

मन मोहन तन धन सघन, रमण राधिका मोर।
श्री राधा-मुखचंद को, गोकुल चंद चकोर॥

दक्षिण नायक—उदाहरण

देखि पदमाकर गुविन्द को अनद भरी,
आई सजि साँझ ही तें हरषि हिलोरे में॥
ए हरि हमारे ई हमारे चलो झूलन को,
हेम के हिंडोरन झुलान के झकोरे में॥

या विधि वधून के सुबैन सुनि वनमाली,
मृदु मुसिक्याय कह्यो नेह के निहोरे में।
कालिह चलि झूलेंगे तिहारेंई तिहारी सौंह,
आज तुम झूलो ह्यां हमारे ही हिंडोरे में॥

दोहा

निज निज मन के चुनि सबै, फूल लेउ इक वार।
यह कहि कान्ह कदम्ब की, हरपि हलाई डार॥

धृष्ट-पति—भेद

धरै लाज उर में न कछु, करै दोस निरसक।
टरै न टारो कैसि हू, कह्यो धृष्ठ सकलक॥

धृष्ट-पति—उदाहरण

ठानें मजा अपने मन को, उर आने न रोसहू दोस दिये को।
त्यो पद्माकर जोवन के मद, पै मद है मदपान पिये को॥
राति कहूं रमि आयो घरै, उर मानें नहीं अपराध किये को।
गारिदै मारिदै टारति भावती, भावतो होत है हार हिये को॥

दोहा

यदपि न बैन उचारियतु, गहि निवाहियतु बाह।
तदपि गरेई परत है, गजब गुनाही नाह॥

शठ—लक्षण

सहित काज मधुरै मधुर, बैनन कहैं बनाइ।
उर अन्तर घट कपट मय, सो सठ नायक आइ॥

शठ—उदाहरण

करि कन्द को मन्द दुलन्द भई, फिरि दाखन के उर दागती हैं।
पदमाकर स्वादु सुधा तें सिरे, मधु तें महा माधुरी जागती है॥

गिनती कहा एरी अनारन की, ये अँगूरन तें अति पागती हैं।
तुम बातें निसीठी करौ रिस में, मिसरी ते मिठी हमें लागती हैं॥

हौं न कियौ अपराध वलि, वृथा तानयतु भौंह।
तुम उरसिज हर परसि कैं, करन रावरी सौंह॥

उपपति ताहि बखानही, जो पर बधु को मीत।
वार वधुन को रसिक सो, वैसिक अलज अभीत॥

उपपति—उदाहरण

आछे किये कुच कञ्चुकी में, घट में नट के से वटा करिबे को।
मो दृग द्वै किये पदमाकर, तो दृग छूट छटा करिवे को॥
कीजै कहा विधि की विधि को, दियौ दारुन लौंटपटा करिवे को।
नेगे हियौ कटिवे को कियो, तिय तेरी कटाच्छ कटा करिवे को।

पुनश्च

ऐन कढे गन गोपिन के, तन मानो मनोभव भाइते काढ़े।
त्यों पदमाकर ख्वालन के दप, वाजि उठे गल गाजत गाढे॥
छाक छके छलहाइन में छिक पावै न छैल छिनौ छवि बाढे।
केसरि लै मुख मींजिबे को, रस भीजत से कर मीजत ठाढे॥

जाहिर जाइ न सकै तहँ, धरहाइन के त्रास।
परे रहत नित कान्ह के, प्रान परोसिन पास॥

वैसिक—उदाहरण

छोरत ही जु छरा के छिनौ छिन, छाये तहाँई अनग मजा के।
त्यों पदमाकर जे सिसकीन के, सोर घनें सुखमोर मजा के॥
दै धन धाम धनी अब तें मन ही मन मानि समान सुधा के।
वार विलासिनि तीके जु हैं, असरा असरा नखरा अखरा के॥

दोहा

हेरि ही हरन कांति वह, सुनि सी करति सुमाति।
दियौ सौंपि मन ताहि तौ, धन की कहा बिसाति॥

श्रोरौ तीन प्रकार वे, नायक भेद बखानि।
मानि सु वचन चतुर पुनि, क्रिया चतुर पहँचानि॥
करै जु तिय पै मान पिय, मानी कहिये ताहि।
करै वचन की चातुरी, वचन चतुर सो आहि॥
करै क्रिया सों चातुरी, क्रिया चतुर सो जानि।
इनके उदित उदाहरन, क्रमते कहत बखानि॥

मानी का उदाहरण

बाल बिहाल परी कबकी दबकी यह प्रीति की रीति निहारो।
त्यों पदमाकर है न तुम्हे सुधि, कीन्हों ज बैरी बसत बिगारो॥
ताते मिलो मन-भावती सों, बलि ह्यांते हहा वच मानि हमारो।
कोकिल की कल बानि सुने, पुनि मान रहैगो न कान्ह तुम्हारो॥

जगत जुराफा है जियत, तज्यो तेज निज भान।
रूसि रहो तुम पूस में, है यह कौन सयान॥
सयुत सुमन सु बेलि सी, सेली सी गुन ग्राम।
लसत हवेली में सुवर, निरखि नवेली बाम॥

वचन चतुरनायक—उदाहरण

दाऊ न नन्द बबा न जसोमति, न्योते गये कहूँ लै सँग भारी।
होहू इतै पदमाकर पौरि में सूनी परी बखरी निसि कारी॥
देखै न क्यो कढि तेरे सु खेत पै धाइ गई छुटि गाय हमारी।
ग्वाल सो बोलि गुपाल कह्यो, सु गुवालिनि पै मन मोहिनी डारी॥

विजन बाग सकरी गली, भयो अँधेरो आइ।
कोऊ तोइ गहै जु इत, तो फिरि कहा बस्याइ॥

क्रिया चतुरनायक—उदाहरण

आई सुन्योति बुलाई भली दिन चारि को जाहि गुपाल ही भावै।
त्यो पदमाकर काहू कह्यो कै, चलो बलि बेगि ही सासु बुलावै॥

सो सुनि रोकि सकै क्यो तहा, गुरु लोगनु तें यह व्यौंत बनावै।
पाहुनी चाहैं चल्यो तब ही जब ही हरि सामुहें छींकत आवै॥

दोहा

जल विहार मिस नीर में, ले चुभकी इक वार।
दह भीनर मिलि परस्पर, दोऊ करत विहार॥

प्रोपित नायक—लक्षण

व्याकुल होय जु विरह वस, बसि विदेस में कत।
ताही सो प्रोपित कहत,, जे कोविद बुधि-वत॥

प्रोपित नायक—उदाहरण

साँझ के सलोने घन सवज सुरगन सों,
कैसे के अनग अग अगनि सतावतो।
कहैं पदमाकर झकोर झिल्ली सोरन को,
मोरन को महत न कोऊ मन ल्यावतो॥
काहू विरही की कही मानि ले तो जोपै दई
जग में दई तो दया सागर कहावतो।
एरे विधि बौरे गुनसार घनो हो तो जो पै,
विरह बनायो तो न पावस बनाव तो॥

तजि विदेस सजि बैस ही, निज निकेत में जाइ।
कब समेटि भुज भेंटिहो, भामिनि हिये लगाइ॥
फिरि फिर सोचत पथिक यह, मेरो निरखि सनेह।
तज्यो गेह निज गेहपति, त्यो न तजै कहु गेह॥
विकल बटोही विरह वस, यहै रहो चित चाहि।
मिलै ज्यु कहु पारस पर्‍यो, मुरकि मिलौं तो ताहि॥

बूझै जो न तियान के, ठानै विविध विलास।
सु अनभिज्ञ नायक कह्यो, वहै नायिका भास॥

प्रत्यक्ष दर्शन

आई भले हौं चली मखियान में, पाई गुविन्द के रूप की झाकी।
त्यौं पदमाकर हार दियो गृह काज कहा और लाज कहा की॥
है नख ते सिख लौं मृदु माधुरी वाकी हैं भौंह विलोकनि बांकी।
आजु धौ ए छवि देखि भटू, अब देखिवे को न रह्यो कछु बाकी॥

हौं लखि आई लखहुँगी, लखैं न क्यो ब्रज लोग।
निसिदिन माचुई सांवरो, दुगुन देखिवे जोग॥

———

उद्दीपन विभाव

लक्षण—दोहा

जिनहिं विलोकत ही तुरत, रसउद्दीपन होत।
उद्दीपन सुविभाव हैं, कहत कविन को गोत॥
सखा सखी दूती सुवन, उपवन षट् ऋतु पौन।
उद्दीपनहिं विभाव में, वरनत कवि मति-भौन॥
चंद चांदनी चन्दनहु, पुहुप पराग समेत।
त्योंही और सिंगार सब, उद्दीपन के हेत॥
कहे जु नायक के सबै, प्रथमहिं विविध प्रकार।
अब वरणत हो तिनहिं के, सचिव सखा जे चार॥

सखा

पीठ मर्द विट चेट पुनि, बहुरि विदूषक होइ।
मोचे मान तियान को, पीठ मर्द है सोइ॥

पीठ मर्द

घूमि देखो घरकि धमार न की धूम देखो,
भूमि देखो भूमित छवावैं छवी छवि कै।
कहै पदमाकर उमग रग सीचि देखौं,
केसरि कीच जामें रह्यो ग्वाल गवि कै।
उडत गुलाल देखो तानन के ताल देखो,
नाचत गुपाल देखो लैहौं कहा दवि कै।
झेलि देखो झरप सकेलि देखो ऐसो सुख,
मेलि देखो मूंठि खेलि देखो फागफवि कै॥

दोहा

हौं गुपाल पै मन चहत, तेरोई ब्रजवाल।
चलति क्यों न नदलाल पै, लै गुलाल रग लाल॥

सुविट

सुविट बखानत हैं सुकवि, चातुर सकल कलान।

चेट

दुहुँन मिलाइवे में चतुर, वहै चेट उर आन॥

विट

पीत पटी लकुटी पदमाकर मोरपखा लै कहूँ गहिनाखी।
यो लखि हाल गुपाल को ताछिन वाल सखा मुकला अभिलाखी॥
कोकिल कोकिल कीसी कुहूकुहू,कोयल कोक की कारिका भाखी।
त्यमि रही ब्रज वाल के सामुहे, आइ रसाल की मजरी रासी॥
हरि को मीत पछीत इमि, गायो विरह वलाय।
परत कान्ह तजि मान तिय,मिली कान्ह सो जाय॥

चेटक

साजि सकेन में साँवरे को सुगयोई जहा हुती ग्वालि सयानी।
त्यो पदमाकर बोलि कह्यो वलि वैठी कहा इतही अकुलानी॥

चाहिए न ऐसी वृषभानु की किशोरी तोड़,
देइबी दगा जो ठीक ठाकुर सनेह की ।
गोकुल की कुल की न गैल की गुपालै सुधि,
गोरस की रसकी न गोधन की न गेह की ।।

दोहा

कौन भाँति आये निरखि, तुम तेहि नन्द किसोर ।
भरभरात भामिनि परी, घरघराति घन-घोर ।।

परिहास

आई भलें द्रुत चालि तू चातुरि आतुर मोहन के मन भाई ।
मौतिन के सर को पदमाकर, पाई कहां धौं इती चतुराई ।।
मैन सिखाई सिखाइसि मैंनहि, यो कहि रैनि की वात जताई ।
ऊपर ग्वाल गुपाल तरे, सुपरे हँसि यों तस्वीर दिखाई ।

दोहा

को तेरो यह सांवरो, यो बूझ्यो सखि आय ।
मुखते कही न वात कछु,रही सुमुखि मुख नाय ।।

दूती

दूतिपने ही में सदा, जो तिय परम प्रवीन ।
उत्तम, मध्यम, अधम हैं, सो दूती विधि तीन ।।

प्रथम दूती

हरै सोच उचरै वचन, मधुर-मधुर हित मानि ।
सो दूती उत्तम कही, रस ग्रन्थन में जानि ।।

उदाहरण

गोकुल की गलिन गलीन यह फैली बात,
कान्है नदरानी वृष भानु भौन ब्याहती ।

कहै पदमाकर यहांई त्यों तिहारी चलै,
ब्याह को चलन यहै सांवरो सराहती ॥
सोचति कहा हो कहा करि हैं चवाइन ये,
आनद की अवनी न काहे अवगाहती ।
प्यारो उपपति तें सुहोत अनुकूल तुम,
प्यारी परकीया ते स्वकीया होन चाहती ॥

दोहा

कालिह कालिन्दी के निकट, निरखि रहे हे जाहि ।
आई खेलन फाग वह, तुमही सो चित चाहि ॥

मध्यम दूती

कछुक मधुर कछु कछु परुष, कहै वचन जो आय ।
ताही को कवि कहत हैं, मध्यम दूती गाय ॥

उदाहरण

बैन सुधा से सुधासी हँसी, वसुधा में सुधा की सटा करती हो ।
त्यों पदमाकर वारहिं वार, सुवार वगारि लटा करती हो ॥
वीर विचारे बटोहिन पै, विन काजहि तौ यो छटा करती हौ ।
विज्जु छटा सी अटा पे चटी, घुंघटाच्छदनि घालि कटा करती हो ॥

दोहा

कुंज भवन लो आवते, कँने सकहि सुभाय ।
जावक रंग भारनि भट्ट, मग में धरति न पांय ॥

अधम दूती

कै पिय सो कै तियहि सो, कहै परुष ही बैन ।
अधम दूतिका कहत हैं, ताही सो मति ऐन ॥

षट ऋतु वर्णन

वसंत

कूलन में केलिन कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलिन कलीन किलकंत हैं।
कहै पदमाकर परागन में पौन हू में,
पानन में पीक में पलासन पगन्त है॥
द्वार में दिसान में दुनी में देस देसन में,
देखो दीप दीपन में दीपत दिगन्त है।
वीथिन में ब्रज में नवेलिन में बेलिन में,
वनन में बागनु में बगरयो बसन्त है॥ १॥

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
और डौर झौरन में बौरन के ह्वै गये।
कहै पदमाकर सुऔरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल और छबि छ्वै गये।
औरै भाँति विहग समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतु राज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै वन ह्वै गये॥ २॥

पात बिन कीन्हे ऐसी भाँति गन बेलिन के,
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंज हैं।
कहै पदमाकर बिसासी या वसन्त के सु,
ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं।
ऊधो यह सूधो सो सँदेसो कहि दीजो भले,
हरिसों हमारे ह्यां न फूले वन कुंज हैं।
किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की,
डारन पै डोलत अंगारन के पुंज हैं॥ ३॥

एब्रजचन्द चलो किन वा ब्रज, लूकें वसन्त की ऊकन लागी।
त्यो पदमाकर पेखो पलासन, पावक सी मनो फूंकन लागी॥
वे ब्रजवारी विचारी वधू, वनवारी हिये लों सु हूकन लागीं।
कारी कुरूप कसाइनी यें सु, कुहू कुहू क्वैलिया कूकन लागी॥

ग्रीष्म

फहर फुहार नीर नहर नदी सी बहै,
छहरें छबीन छाम छीटिन की छाटी हैं।
कहै पदमाकर त्यो जेठ की जलाकें तहां,
पावै क्यों प्रवेस वेस वेलिन की वाटी हैं॥
धारहू दरीन बीच धारहू तरफ तैसो,
वरफ बिछाई तापै सीतल सुपाटी हैं।
गजक अंगूर को अंगूर से ऊचौहे कुच,
आसव अंगूर को अंगूर ही की टाटी हैं।

वर्षा

मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे मिले,
मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसा की हैं।
कहै पदमाकर त्यो नदन नदीन नित,
नागरी नदेलिन की नजरि नसाकी है॥
दौरत दरेरो देत दादुर सुदूंदे देह,
दामिनी दमंकत दिसान में दसा की हैं।
बद्दलनि बुंदनि विलोकि वगुलान वाग,
वंगलान बेलिन वहार वरसा की है॥ १॥
चचला चमकें चहुँ घोरन ते चाह भरी,
चरज गई यों फेरि चरजन लागीरी;

कहै पदमाकर लवगन की लोनी लत,
लरज गई थी फेरि लरजन लागी री ॥
कैस धरों धीर वीर त्रिविधि समीरें तन,
तरज गई थी फेरि तरजन लागी री।
घुमड़ि घमण्ड घटा घन की घनेरी अबै,
गरजि गई थी फेरि गरजन लागी री ॥ २ ॥

बरसत मेह नेह सरसत अंग अंग,
झरसत देह जैसे जरत जवासो है।
कहै पदमाकर कलिन्दी के कदम्बन पै,
मधुप न कीन्हो आइ महत मवासो है ॥
ऊधो यह ऊधम जताइ दीजो मोहन को,
ब्रज को सुवासो भयो अगिनि अवासो है।
पातकी पपीहा जलपान कौन प्यासो यह,
व्यथित वियोगिन के प्रानन को प्यासो है ॥ ३ ॥

शरद

तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै,
वृन्दावन वीथिन बहार बंसीवट पै।
कहै पदमाकर अखण्ड रास मण्डल पै,
मंडित उमडि महा कालिन्दी के तट पै ॥
छिति पै छवानन पै छाजत छतान पर,
ललित लतान पर लाडिली की लट पै।
आई भली छाई यह सरद जुन्हाई जेहि,
पाई छवि आजु ही कन्हाई के मुकट पै ॥ १ ॥

खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदगन की,
रुनुक झुनुक सुर नूपुर के जाल की।

कहै पदमाकर त्यों बांसुरी की धुनि मिलि,
रह्यो बांधि सरस सनाको एक ताल को।
देखतं बनत पै न कहत बनैरी कछू,
विविध विलास यों हुलास यह ख्याल को।
चन्द छवि रास चांदनी को परकास,
राधिका को मद हास रास मण्डल गुपाल को॥

हेमन्त

अगर की धूप मृग मद की सुगन्ध वर,
बसन विसाल जाल अंग ढांकियतु हैं।
कहै पदमाकर सुपौन को न गौन जहां,
ऐसे भौन उमंगि उमग छाकियतु हैं॥
भोग और संयोग हित सु ऋतु हेमन्त ही में,
ऐते और नुखद सुहाय वाकियतु है।
तान की तरग तरुणापन तरणि तेज,
तेल तूलि तरुणि तमाल ताकियतु है॥ १॥
गुलगुली गिलमें गलीचा हैं, गुनी जन हैं,
चांदनी हैं, चिक हैं, चिरागन की माला हैं।
कहै पदमाकर त्यों गजक गिजाएं सजी,
सेज हैं, सुराही हैं, सुरा है और प्याला हैं॥
सिसिर के पाला कौन ब्यापत कसाला तिन्हें,
जिनके अधीन एते उदित मसाला है।
तान तुक ताला हैं, विनोद के रसाला है,
दुसाला है, सुदाला है, विसाला चित्रसाला है॥

———

अनुभाव लक्षण

जिनही ते रतिभाव को, चित में अनुभव होत ।
ते अनुभव शृङ्गार के, बरनत है कवि गोत ॥

सात्वकि भाव स्वभाव घृत, आनद अंग विकाम ।
इनही ते रतिभाव को, परगट होत विलास ॥

अनुभाव उदाहरण

गोरस को लूटिवो न छूटिवो छरा को गनै,
टूटिवो गनै न कछू मोतिन की माल को ।
कहै पदमाकर गुआलिनि गुनीली हेरि,
हरषें हँसै यो करै झूठे झूठ ख्याल को ॥
हाँ करति ना करति नेह की निसा करति,
सांकरी गली में रग राखति रसाल को ।
देवो दधिदान को सु कैसें ताहि भावत है,
जाहि मन भायो झार झगरो गुपाल को ॥

स्तम्भ लक्षण

मृदु मुसिकाय उठाय भुज, छन घूंघट उलटारि ।
को धनि ऐसो जाहि तू, इक टक रही निहारि ॥१॥

स्तम्भ स्वेद रोमाच कहि, बहुरि कहत स्वर भङ्ग ।
कम्प बरन वैबर्ण्य पुनि, आंसू प्रलय प्रसङ्ग ॥२॥

अतगंत अनुमान में, आठहु सात्विक भाव ।
जृम्भा नवम बखानहीं, जे कवीन के राव ॥३॥

हरष लाज भय आदि ते, जवै अग थकि जाति ।
स्तम्भ कहत तासो सबै, रस ग्रन्थन सरसात ॥४॥

स्तम्भ का उदाहरण

या अनुराग की फाग लखो जहं रागती राग किशोर किसोरी।
त्यों पदमाकर घाली घली, फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी।
जैसी की तैसी रही पिचकी, कर काहू न केसरि रग में बोरी।
गोरिन के रग भीजिगो सांवरो, सांवरे के रग भीजी सुगोरी॥

स्वेद का लक्षण

पियहि निरखि तिय थकि रही, बूझेहु सखिन निहार।
चलति क्यो न, क्यो चलहुं मग, परत न पग रग भार॥

रोप लाज डर हरप श्रम, इनहीं ते जो होत।
अग अग जाहिर सलिल, स्वेद कहत कवि गोत॥

स्वेद उदाहरण

एरी वलवीर के अहीरन की भीरन में,
सिमिट समीरन अवीर को अटा भयो।
कहै पदमाकर मनोज मन मौज नही,
मैंन के हटा में पुनि प्रेम को पटा भयो॥
नेही नदलाल की गुलाल की घलाघल में,
एजे तन तपसी जघन को घटा भयो,
घोरें चख चोटिन चलाक चित्त चोरी भयो,
लुटि गई लाज कुलकानिको कटा भयो॥

दोहा

यों न्नम सीकर नुमुख तें, करत कुचन परवेस।
उदित चन्द्र मुकता छतनि, पूजत मनहुं महेस॥

कहै पदमाकर मद्रूसे लोट पोट भई,
चित्त में चुभी जो चोट चाय चर वारे की ॥
बावरी लो बूझति विलोकति कहा तू वीर,
जाने कहा कोऊ पीर प्रेम हटवारे की ।
उमडि उमडि वहै वरसै सुअँखिन ह्वै,
घट में वसी जो घटा पीत पट वारे की ॥

प्रलय लक्षण

आँखिन ते आँसू उमहि, परत कुचन पर आन ।
जनु गिरीस के सीस पर, डारत झख मुकतान ॥
तन-मन की न सम्हार जहँ, रहै जोव गन गोय ।
सो सिंगार रस में प्रलय, वरनत कवि सब कोय ॥

प्रलय उदाहरण

ये नद गांव ते आये इहाँ, उत आई सुता वह कौन हू ग्वाल की ।
यों पदमाकर होत जुराजुरी, दोउ न फाग करी इहि ख्याल की ॥
डीठि चली उनकी इन पै, इनकी उन पै चली मूँठि उताल की ।
डीठि सों डीठि लगी उनकी, इनकें लगी मूँठि सी मूँठि गुलाल की ॥

जृम्भा लक्षण

दै चख चोट अँगोट मम, तजी जुवति वन माहि ।
खगी विकल कब की परी, सुधि सरीर की नाहि ॥
पिय विछोह सम्मोह कै, आलस ही अवगाहि ।
छिन छिन वदन विकासिबो, जृम्भा कहिये ताहि ॥

जृम्भा उदाहरण

आरस सो रस सो पदमाकर, चौंकि परै मुख चुम्बन के लिये ।
पीक भरी पलकें झलकै अलकै झलकें छबिछूटि छटा लिये ॥

सो सुख भाखि सकै भव को, रस कै कसकै मसकै छतियाँ छिये
र ति की जागी प्रभात उठी, अँगरात जँभात लजात लगी हिये ॥

दर दर दौरति सदन द्युति, सम सुगन्धि सरसात।
लखत बधा न मालम भरी, परी तिया जनु हात॥

अनुभाव प्रकरण

दोहा

अनुभावहि मैं जानिये, लीलादिक जे हाव।
ते सँजोग शृंगार में, वरनत सब कविराव॥

लीला हाव लक्षण

प्रकट स्वभाव तियान के, जनि सिंगार के काज।
हाव जानिये ते सबै, यो भाषत कविराज॥
लीला प्रथम विलास त्रिय, पुनि विक्षिप्त बखान।
विभ्रम किलकिंचित बहुरि, मोट्टाइत पुनि जान॥
विब्बोकहु पुनि विहृत गनि, बहुरि कुट्टमित गाव।
रस ग्रन्थन में ये दसहु, हाव कहत कविराव॥
पिय तिय को तिय पीय को, धरैं जु भूषण चीर।
लीला हाव बखानहीं, ताही को कवि धीर॥

लीला हाव उदाहरण

रूप रचि गोपी को गुविन्द गो तहाँई जहाँ,
कान्ह बनि बैठी काहू गोप की कुमारी है।

विभ्रम हाव उदाहरण

बछरै खगी धावै गऊ तिहि को, पदमाकर को मन लावत है।
तिय जानि गिरैयां गही वनमाल, सुऐंचे लला इच्यो आवत है॥
उलटी करि दोहनी मोहनी की, अंगुरी थन जानि कै दावत है।
दुहिबो औ दुहाइबो दोउन को, सखि देखत ही बनि आवत है॥

किलकिंचित हाव लक्षण

पहरि कंठ बिच किंकिनी, कस्यो कमर बिच हार।
हरबराइ देखन लगी, कवते नंद कुमार॥
होत जहाँ इक बारही, त्रास हास रस रोस।
तासों किलकिंचित कहत, हाव सबै निरदोस॥

किलकिंचित हाव उदाहरण

फागुन में मधुपान समै, पदमाकर आइगे संग संगाती।
अंचल ऐंचि उचाय भुजा भरै, भूमि गुलाल की ख्याल सुहाती॥
झूठिहु दै झझकाय तहाँ तिय, झाँकी झुकी झिझकी मद माती।
रूमि रही घरी आधिक लौं, तिय झारति अंग निहारति छाती॥

ललित हाव लक्षण

चढ़त भौंह धरकत हियो, हरषत मुख मुसिक्यात।
मद छाकी तिय को जु पिय, छवि छकि परसत गात॥
जहँ अंगन की छवि सरस, बरनन चलन चितौन।
ललित हाव ताको कहत, जे कवि कविता भौन॥

ललित हाव उदाहरण

सजि ब्रज चंद पै चली यों मुख चंद जाको,
चंद चांदनी को मुख मंद सो करत जात।

कहै पदमाकर त्यो सहज सुगन्ध ही के,
पुञ्ज गन कुञ्जन में कञ्ज से भरत जात ॥
धरत जहाँई जहाँ पग है पियारी तहाँ,
मञ्जुल मजीठ ही के मॉट के ढरत जात ।
बारन ते हीरा मेत सारी की किनारन ते,
हारन ते मुकता हजारन झरत जात ॥

मोट्टायित हाव लक्षण

सजि सिगार सुहमारि तिय, कुटिल सुटुगन दराज ।
लखहु नाह आवत चली, तुमहि मिलन तकि आज ॥
सुनत भावते की कथा, भाव प्रकट जहँ होत ।
मोट्टायित तासो कहे, हाव कविन के गोत ॥

मोट्टायित हाव उदाहरण

रूप दुहूँ को दुहून सुन्यो, सु रहैं तवतै मनो सँग सदाही ।
ध्यान में दोऊ दूहन लखे, हरसे अंग अंग अनंग उछाहीं ॥
मोहि रहे कबके यो दूहू, पदमाकर और कछू सुधि नाहीं ।
मोहन को मन मोहनी में बस्यो, मोहनी को मन मोहन मॉही ॥

विब्बोक हाव लक्षण

दोहा—वसीकरन जवते सुन्यो, स्याम निहारो नाम ।
दगन मूँदि मोहित भई, पुलकि पसीजत वाम ॥
करै निरादर ईठ को निज गुमान गहि वाम ।
कहत हाव विब्बोक वह, जे कवि मति अभिराम ॥

विब्बोक हाव उदाहरण

केसर रग महावर को सरसै, रस रग अनूप चमू के ॥
घूम धमारन को पदमाकर, छाय अकास अबीर के भूके ॥

संचारी-भाव प्रकरण

संचारी भाव लक्षण—दोहा

जोई भावन को जिते, अभिमुख रहे मिताव ।
जे नवरस में मचरं, ते नचारी भाव ।।
जोई भावन में रहत, याविधि प्रकट विलात ।
ज्यो तरग दरियावमें,उठि उठि तिर्तहि समात ।।
थिरह्वै थाई भावतव, परिपूरन रस होत ।
थिर न रहत रस रूपलौं, सचारिन को गोत ।।
थाई सचारीन में है, इतनोई भेद ।
सचारिन के कहत है, तैंतिस नाम निवेद ।।

संचारी भाव उदाहरण

कहि निर्वेद ग्लानिशंका त्यो असूया श्रम
मद धृति आलस विषाद मति मानिये ।
चिन्ता मोह सपन विवोध स्मृति अमर्ष,
गर्व उतसुकता सु अवहित ठानिये ।।
दीनता हरष व्रीडा उग्रता मुनिद्रा व्याधि,
मरण अपस्मार आवेगहु आनिये ।
त्रास उन्माद पुनि जड़ता चपलताई,
तैंतिस वितर्क नाम ताही विधि जानिये ।।

निर्वेद लक्षण

दोहा—या विधि सचारी सवै, वरनत हैं कविलोग ।
जे ज्यहि रसमें संचरै,ते तहँ कहिवे जोग ।

उर उपजै कछु खेद लहि, विपति इर्ष्या ज्ञान ।
ताहीते निज निदरिबो, सो निरवेद बखान ॥
पुनि उसास अरु दीनता, विवरन अश्रु निपात ।
निरवेदहु ते होत हैं, ए सुभाव निज गात ॥

निर्वेद उदाहरण

यो मन लालची लालच मे लगि, लोल तरंगनि में अवगाह्यो ।
त्यों पदमाकर देह के गेहके, नेह के काज न काहि सराह्यो
पाप किये पै न पातकी पावन, जानि कें रामको प्रेम निवाह्यो ।
चाह्यो भयो न कहू कबहू, यमराजहू सो वृथा वैर विसाह्यो ॥

ग्लानिका लक्षण—दोहा

भयो न कोऊ होइगो, मो समान मति मन्द ।
तजे न अवलों विषय विष, भजे दशरथ नन्द ॥
भूखहि ते कि पियासते, कै रति श्रमते अग ।
विह्वल होत गलानिसो, कपादिक स्वर भग ॥

ग्लानिका उदाहरण

आजलखी मृगनैनि मनोहर, वेनी छुटी छहरे छवि छाई ।
टूटे हरा हियरा पै परे, पदमाकर नीक सी लक लुनाई ॥
कै रति केलि सकेलि सुखै कलि केलिके भौन ते वाहिर आई ।
राजि रही रति आखिनमें मनमें धौ कहा तनमें सिथिलाई ॥

शंका लक्षण—दोहा

शिथिल गात कांपत हियो, वोलत वनत न वैन ।
कभी खरी विपरीत रति कहत रँगीले नैन ॥
कै अपनी दुर्नीतिकै, दुवन क्रूरता मानि ।
आवै उर में सोच अति सोशका पहचानि ॥

धृति लक्षण

साहस ज्ञान सुसंग तें, धरै धीरता चित्त।
ताही सों धृति कहत हैं, सुकवि सबै नित नित॥

धृति उदाहरण

रे मन साहसी साहस राखि, सुसाहस सों सब जेर फिरैंगे।
ज्यों पदमाकर या सुख में, दुख त्यों दुख में सुख सेर फिरैंगे॥
वैसे ही बेनु बजावत स्याम, सुनाम हमार हू टेर फिरैंगे।
एक दिना नहीं एक दिना, कबहूँ फिरि वे दिन फेर फिरैंगे॥

पुनश्च

या जग जीवन को हैं यहै फल, जो छल छाँडि भजै रघुराई।
सोधि कै संत महंतन हू, पदमाकर बात यहै ठहराई॥
ह्वै रहो होनी प्रयास विना, अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई।
जो विधि भाल में लीक लिखी, वसु ढाई बढै न घटै न घटाई॥

वन चर जलचर गगनचर, अजगर नगर निकाय।
पदमाकर तिन सबन की, खबरि लेत रघुराय॥

आलस लक्षण

जागरणादिक ते जहाँ, जो उपजत अलसान।
ताही सों आलस कहत, जे कोबिद रसखानि॥

आलस उदाहरण

गोकुल में गोपिन गुविन्द संग खेली फाग,
राति भरी आलस में ऐसी छवि छलकै।
देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे,
नींद भरे नयन कछूक भरै झलकै।
लाली भरे अधर बहाली भरे मुखवर,
कवि पदमाकर बिलोकै कौन चलकै।

भाग भरे लाल पौ सुहाग भरे पग सब,
पीक भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं ॥

दोहा-निसि जागी लागी हिये, प्रीति उमगत प्रात।
उठि न सकत आलस वलित, सहज सलोने गात ॥

विषाद लक्षण

फुरै न कछु उद्योग जहँ, उपजै अति ही सोच।
ताहि विषाद बखानही, जे कवि सदा असोच ॥

विषाद उदाहरण

सोच न हमारे कछू त्याग मन मोहन के,
तन को न सोच सोतो यों हीजरि जाइ है।
कहै पदमाकर न सोच अब ऐहू यह,
आइ है तो आइ है न आइ है न आइ है ॥

योग को न सोच अरु भोग को न सोच कछू,
यही बडो सोच सो तौ सबन सुहाइ है।
कूबरी के कूबर में बँध्यो है त्रिभंगता-
त्रिभंग को त्रिभंगी लाल कैसे सुरझाइ है ॥

पुनश्च

एकै संग धाये नंदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगन गये जो गढि आनंद मढै नही।
धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एको चित्त पै चढै नही ॥

कैसी करों, कहाँ जाउँ, कासों कहों कौन सुने,
कोउ तो निकासो जासो दरद बढै नही।

विबोधका लक्षण—दोहा

भयो करि झूठी मानिये, सखि सपने की बात ।
जुहरि रह्यो सोवत हियाँ, सो न पाइयत प्रात ॥

विबोध उदाहरण

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले
अध खुली वैस नख रेखन की झलकें ।
कहै पदमाकर नवीन अध नीवी खुली,
अध खुले छहरि छराके छोर छलकें ॥
भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतै की ओर,
झाखी झकि झिझकि उघारि अध पलकें ।
आखि अध खुली अधखुली खिरकी है खुली,
अधखुले आनन पै अधखुली अलकें ॥

स्मृति लक्षण

अनुरागी लागी हिये, जागी वडे प्रभात ।
ललित नैन वैनी छुटी, छाती पर छहरात ॥

स्मृति उदाहरण

कंचन आभा कदव तरे करि, कोऊ गई तिय तीज तयारी ।
हौंहू गई पदमाकर त्यों चलि, औचक आइगौ कुंज विहारी ॥
हेरि हिंडोरे चढाय लियो, किय कौतुक सो न कह्यो परै भारी ।
फूलनवारी पियारी निकुंज की, झूलत है नव झूलन वारी ॥

दोहा

करी जु ही तुम वादि ना, वाके संग वतरानि ।
वहे सुमिरि फिरि फिरि तिया, राखति अपने प्रान ॥

अमर्ष लक्षण

जहाँ जु अमरष होत लखि, दूजे को अभिमान ।
अमरष ताको कहत हैं, जे कवि सदा सुजान ॥

अमर्ष उदाहरण

जैसो तैं न मोसों कहू नेकहू डरात हुतो,
ऐसे अब हौं हू तोसो नेकहु न डरि हौं ।
कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो तो,
उमँड कर तोसो भुज दंड ठोकि लरिहौं ॥
चल्यो चल चल्यो चल विचरि न बीच ही तें,
कीच बीच नीच तो कुटुम्ब को कचरि हौं ।
एरे दगादार मेरे पातक अपार तोहि,
गंगा को कछार में पछार छार करि हौं ॥

गर्व लक्षण

दोहा—गरव सु अंजन ही बिना, कंजन की हरि लेत ।
खंजन मद भंजन अरथ, अंजन अँखियन देत ॥
बल विद्या रूपादि को, कीजै जहाँ गुमान ।
गरब कहत सब ताहि को, जे कवि सुमति सुजान ॥

गर्व उदाहरण

बानी के गुमान कल कोकिल कहानी कहा,
बानी की सुबानी जाहि भावत भनै नहीं ।
कहै पदमाकर गुराई के गुमान कंच,
कुंभन पै केसरि की कंचुकी ठनै नहीं ॥
रूप के गुमान तिलउत्तमा न आनै उर,
आनन निकाई पाइ चन्द्र किरनै नहीं ।
मृदुता गुमान मखतूल हू न मानै कछु,
गुन के गुमान गुन गौरि को गुनै नहीं ॥

दोहा–गुल पर गालिब कमल हैं, कमलन पै सु गुलाब।
गालिब गहब गुलाब पैं, मो तन सुरभि सुभाव॥

उत्सुकता लक्षण

जहा हितू के मिलन हित, चाह रहति हिय माहि।
उत्सुकता तासों कहत, मत्र ग्रथन में चाहि॥

उत्सुकता उदाहरण

ताकिये जितै तितै कुसुभ सो चुयोई परै,
प्यारी परबीन पाठ धरति–जितै जितै।
कहै पदमाकर सुधीन ते उताली वन–
माली पै चली यो वाल वासर बितै–चितै॥
वार ही के भारन उतारि देत आभरन,
हीरन के हार देत हिलन हितै–हितै।
चांदनी के चौसर चहूंधा चौक चॉदनी में,
चांदनी सी आई चद चादनी चितै–चितै॥

दोहा–सजे विभूषण वसन सब, सुपिय मिलन की हौंस।
सह्यो परत नहि कैस हू, रह्यो अघघरी द्यौस॥

अवहित्थ लक्षण

जो जँह करि कछु चातुरी, दसा दुरावै आय।
ताही सो अवहित्थ यह, भाव कहत कविराय॥

अवहित्थ उदाहरण

जोर जगो जमुना जल धार में, धाइ धँसी जल केलि की माती।
त्यो पदमाकर पैंरि चलै, उछरै जब तुग तरग विघाती॥
टूटे हरा छरा छूटे सबै, सरबोर भई अँगिया रग राती।
को कहतो यह मेरी दसा, गहतो न गुविन्द तो मैं वहि जाती॥

दोहा—निरखत ही हरि हरषि कै, रहे सुग्रांसू छाय।
बूझत अलि केवल कह्यो, लग्यो धूम ही धाय॥

दीनता लक्षण

अति दुख न विरहादि तें, परति जबहि जो दीन।
ताहि दीनता कहत हैं, जे कवित्त रसलीन॥

दीनता उदाहरण

कै गिनती सी इती विनती, दिन तीनिक लो बहु वार सुनाई।
त्यो पदमाकर मोह मया करि, तोहि दया न दुखीन की ग्राई॥
मेरो हरा हर हार भयो अब ताहि उतारि उन्हे न दिग्राई।
ल्याई न तू कबहूं वन माल, गोपाल की या पहिरी पहराई॥

दोहा

दोहा—मुख मलीन तन छीन छवि, परी सेज परदीन।
लेत क्यो न सुधि सावरे, नेही निपट नवीन॥

हर्ष लक्षण

जहां कौन हू बात में. उर उपजत ग्रानद।
प्रगटै पुलक प्रस्वेद ते, कहत हरप कवि वृन्द॥

हर्ष उदाहरण

जग जीवन को फल जानि परयो, धनि नैनन को ठहरैयतु है।
पदमाकर ह्यो हुलसै पुलकै, तन सिंधु सुधा के ग्रन्हैयतु हैं॥
मन पैरतु सो रस के नद में, ग्रति ग्रानद में मिलि जैयतु है।
ग्रब ऊंचे उरोज लखे तिय के, सुर राज के राज सो पैयतु है॥

दोहा

दोहा—तुमहि विलोकि विलोकि ये, हुलसि रहे यों गात।
ग्रांगी में न समात उर, उर में मुद न समात॥

व्रीड़ा लक्षण

जहाँ कौनहू हेतु तें, उर उपजत अति लाज ।
व्रीड़ा ताको कहत हैं, सुकविन के सिर ताज ॥

व्रीड़ा उदाहरण

काल्हि परो फिरि साजियो स्यान सु, आजु तो नैन सों नैन मिलालै ।
त्यों पदमाकर प्रीति प्रतीति में, नीति की रीति महा उर सालै ॥
ये दिन जोवन जात इतै सुनु लाज इती तु करैगी कहाँ लै ।
नेकु तो देखन दै मुख चन्द्र, सो चन्द्र मुखी मति घूँघट घालै ॥

दोहा

दोहा—प्रथम समागम की कथा, बूझी सखिन जुआइ ।
मुख नवाइ सकुचाइ तिय, रही सुघूँघट नाइ ॥

उग्रता लक्षण

निरदैपन सो उग्रता, कहत सुमति सब कोइ ।
शयन कहावत सोइवो, वहै सुनिद्रा होइ ॥

उग्रता उदाहरण

सिन्धु के सपूत सिंधुतन्तनया के बंधु,
मंदिर अमंद सुभ सुन्दर सुधाई के ।
कहै पदमाकर गिरीस के बसे हो सीस,
तारन के ईस कुल कारन कन्हाई के ॥
हाल ही के विरह विचारी ब्रजबाल ही पै,
ज्वाल से जगावत जुआल सी लुनाई के ।
एरे मतिमंद चंद आवत न तोहि लाज,
ह्वै कैं द्विजराज काज करत कसाई के ।

निद्रा लक्षण दोहा

कहा कहौं महिमा काम की, हिय निरदेपन आज ।
तन जारत पारत विपति, भपति उजारति लाज ॥

निद्रा उदाहरण

चहचही चुभकैं चुभी हैं चोक चुंवन की,
लहलही लाँबी लटैं लपटीं सुलक पर ।
कहै पदमाकर मजान मरगजी मंजु,
मसकी सुआगी है उरोजन के अंक पर ॥
सोई सरसायो भो सुगधनि समोई स्वेद,
सीतल सुलोने लोने वदन मयक पर ॥
किन्नरी नरी है कै छरी है छवि दार परी,
टूटि सी परी है कै परी है परियंक पर ॥

दोहा

नंद नंदन नव नागरी, लखि सोवत निरमूल ।
उर उघरे उरजन निरखि, रह्यो सुमानन फूल ॥

व्याधिका लक्षण

विरह विवस कामादि ते, तन संतापित होय ।
ताही को सब कवि कहत, व्याधि कहावत सोय ॥

व्याधि उदाहरण

दूरिहिते देखत विथा मैं वा वियोगिनी की,
आई भले भाजि यहां लाज पढि आवैगी ।
कहै पदमाकर सुनो हो घनस्याम जाहि,
चेतत कहू जो एक आह कढि जावैगी ॥

सुनि आहट पिय पगन की, भभरि भजी यों नारि ।
कहुँक नाक कहुँ किंकिनी, कहुँ नूपुर डारि ॥

त्रास लक्षण—दोहा

जहाँ कौन हूँ अहित तें, उपजत कछु भय आइ ।
ताहीको नित त्रास कहि, बरनत हैं कवि राइ ॥

त्रास उदाहरण

ए ब्रजचंद गुविन्द गुपाल, सुन्यो न कितेक कलाम किये मैं ।
त्यों पदमाकर आनन्द के नद हो नँद नन्दन जान लिये मैं ॥
माखन चोरि कै खोरिन ह्वै, चले भागि कछू भय मान हिये मैं ।
दूरि ही दौरि दुरे जु चहो, तो दुरौ किन मेरे अँधेरे हिये मैं ॥

दोहा

सिसिर सीत भय भीत कछु, सुपरि प्रीति के पाय ।
आपुहिते तजि मान तिय, मिली पीतमैं जाय ॥

उन्माद लक्षण

अविचारित आचरण जो, सो उनमाद बखान ।
व्यर्थ वचन रोदन हँसी, ये स्वभाव तहँ जान ॥

उन्माद उदाहरण

आपुहि आपु पै रूसि रही, कबहू पुनि आपु ही आपु मनावै ।
त्यों पदमाकर ताकै तमालनु, भेंटिवे को कबहू उठि धावै ।
जो हरि रावरो चित्र लखै तो कहूँ कबहूँ हँसि हेरि बुलावै ॥
व्याकुल बाल सुमालिन सो, कह्यो चाहै कछू तो कछू कहि आवै ॥

दोहा

छिन रोवति छिन हँसि उठति, छिन बोलति छिन मौन ।
छिन छिन पर छीनी परति, भई दसा धौं कौन ॥

जड़ता लक्षण

गमन ज्ञान आचरन की, रहै न जह सामर्थ।
हित अनहित देखै सुनै जड़ता कहत समर्थ॥

जड़ता उदाहरण

आज बरसाने की नवेली अलबेली वधू,
मोहन बिलोकिवे को लाज काज लै रही।
छज्जा छज्जा झांकती झरोखन झरोखन ह्वै,
चित्रसारी चित्रसारी चन्द्र सम ज्वै रही॥
कहै पद्माकर त्यों निकस्यो गुविन्द ताहि,
जहाँ तहाँ इकटक ताकि धरी ह्वै रही।
छज्जावारी छकी सी उझकी सी झरोखा वारी,
चित्र कीसी लिखी चित्रसारी वारी ह्वै रही॥

दोहा

एलै दुहूँन घनै दुहूँ, दुहुन बिसरिगै गेह।
इक टक दुहुन दुहू लखै, अटकि अटपटे नेह॥

चपलता लक्षण

जहँ अति अनुरागादिते, थिरता कछू रहै न।
तिन चित चाहै आचरन, यहै चपलता ऐन॥

चपलता उदाहरण

कौतुक एक लख्यो हरि ह्यों, पदमाकर यो तुमें जाहिर की में।
कोऊ बडे घर की ठकुराइन, ठाडी न घात रहै छिनकी में॥
झांकति हैं कबहू झंझरीन झरोखन त्यो खिरकी थिरकी में।
झाकति ही खिरकी में फिरै, थिरकी थिरकी खिरकी खिरकी में॥

दोहा

चकरी लौं सकरी गलिन, छिन आवत छिन जात ।
परी प्रेम के फंद में, वधू बितावत रात ॥

वितर्क लक्षण

उर उपजत सन्देह जहँ, कीजै कछू विचार ।
ताहि वितर्क विचारही, जे कवि सुमति उदार ॥

वितर्क उदाहरण

छोम गनगौरि के सु गिरिजा गुसाँइनि को,
आवत यहाँई अति आनद इतै रहे ।
कहै पदमाकर प्रतापसिंह महाराज,
देख्यो देखिवे को दिव्य देवता तितै रहे ॥
सैल तजि, बैल तजि फैल तजि गैलन में,
हेरन उमा को यो उमापति हितै रहे ।
गौरिन में कौन धौं हमारी गुन गौरि यहै,
शंभु घरी च्वारिक लौं चकित चितै रहे ॥

पुनश्च

वेऊ आये द्वारे ह्वै हुती जो अगवारे ओर,
द्वारे अगवारे कोऊ तौ न तिहि कान में ।
कहै पदमाकर वे हरषि निरखि रहे,
त्यों ही रही हरषि निरखि नंदलाल में ॥
मोहितो न जान्यो गयो एरी भली मेरो मन,
मोहन के जाइ धौं परयो है कौन ख्याल में ।

भूल्यो भौंह भाल में चुभ्यो है टेढी चाल में,
छक्यो हैं छविजाल में कै बान्ध्यो वनमाल में ॥

किधों सुगन्धपक आम में, मानहुँ मिल्यो मलिन्द ।
किधों तनक ह्वै तम रह्यो, कै ठोडो को विन्द ॥

स्थायी भाव प्रकरण

स्थायी भाव लक्षण

रस अनुकूल विकार जो, उर उपजत है आय ।
थायी भाव बखानही, तिनही को कविराय ॥
है सब भावन में सिरे, टरत न कोटि उपाव ।
है परिपूरण होत रस, तेई थायी भाव ॥
रति इक हास जु सोक पुनि, बहुरि क्रोध उतसाह ।
भय गलानि आचरज निरवेद कहत कविनाह ॥
नव रस के नोई इतै, थायी भाव प्रमान ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, या विध कहत सुजान ॥

रति का लक्षण

सुप्रिय चाहते होत जो, सुमन अपूरब प्रीति ।
ताही को रति कहत है, रस ग्रथन को रीति ॥

उत्साह उदाहरण

इत कपि रीछ उत राक्षगन ही की चमू,
डंका देत बंका गढ लंका ते कढ़ै लगी ।
कहै पदमाकर उमडि जग ही के हित,
चित में कछूक चोप चाप की चढ़ै लगी ॥
बानन बहाइबे को कर में कमान कसि,
छाई धूरिधान आसमान में मढ़ै लगी ।
देखतें बनी है दुहूँ दल की चढाचढी में,
राम दृग हू पे नेक लाली सी चढ़ै लगी ॥

मेघनाद को लखि लखन, हरषे धनुष चढाय ।
दुखित विभीषन दवि रह्यौ, कछु फूले रघुराय ॥

भय लक्षण

विकृत भयकर के डरन, जो कछु चित अकुलात ।
सो भय थाई भाव है, कछु सशंक जहँ गात ॥

भय उदाहरण

चितें-चितें चारो ओर चौंकि-चौंकि परे त्योंही,
जहाँ-तहाँ जब-तब खटकत पात हैं ।
भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनी के कछु,
डरन डराने से उठाने रोम गात हैं ॥
कहै पदमाकर सु देखि दसा मोहन की,
सेस हू, सुरेस हू, महेस हू सिहात हैं ।
एक पाय भीत एक पाय मीत काँधे धरें,
एक हाथ छीको एक हाथ दधि खात हैं ॥

तीनि पैग पुहुमी दई, प्रथमहिं परम पुनीत ।
बहुरि बदन लखि बामनैं, भै बलि कछुक सभीत ॥

ग्लानि लक्षण

जहँ घिनाय चितचोज लखि, सुमिरि परस मनमाह ।
उपजत जो कछु घिन यहै, ग्लानि कहत कविनाह ॥

ग्लानि—उदाहरण

आवत गलानि जो बखान करों जादा यह,
मादा मल मूत और मज्जा की सलीती है ।
कहैं पदमाकर जरा तो जागि भीजी तब,
छीजो दिन रैनि जैसे रैनु ही की भीती है ॥
सीतापति राम के सनेह बस बीती जूपै,
तौ तौ दिव्य देह यम यातना ते जीती है ।
रीती राम नाम ते रही जो बिन काम तौ,
, या खारिज खराब हाल खाल की खलीती है ॥

लखि विरूप सूरपनखैं सरुधिर चरबि चुचात ।
सिय हिय में घिन की लता, भई सु द्वै द्वै पात ॥

अचरज लक्षण

दरस परस सुनि सुमिरि जहँ, कानहु अजब चरित्र ।
होइ जु चित विस्मित कछू, सो आचरज पवित्र ॥

अचरज उदाहरण

देखत क्यों न अपूरब इन्दु में, द्वै अरविन्द रहे गहिलाली ।
त्यों पदमाकर कीर बधू इक, मोती चुगै मनो ह्वै मतवाली ॥
ऊपर ते तम छाय रह्यो रवि की दब ने न दबै सुनि स्वाली ।
यो सुनि बैन सखी के विचित्र, भये चित चक्रित ते वनमाली ॥

सुरत मध्य मति लसत हरप हुलसत चप चचन ।
कवि पदमाकद छकित झपित झपि रहत हगचल ॥
इमि नित विपरीत सुरति समै,
अस तिय सुप साधक जु नव ।
हरि हर विरचि पुर उरगपुर,
सुर पुर लं कह ग्राज अव ॥
तिय पिय को पिय ताय के, नख सिख साजि सिगार ।
करि वदली तन मनहु को, दम्पति करत विहार ॥

वियोग शृंगार

जहँ वियोग पीय तीय को, दुख दायक अति होत ।
विप्रलभ शृंगार सो, कहत कवि न को गात ॥
शुभ सीनल मद सुगध ममोर, कछू छन छद म छ्वै गये हैं ।
पदमाकर चादनी चदहू के, कछू ओर ही डोर न ह्वै गये हैं ॥
मन मोहन सो बिछुरे इत ही, बनि कै न अवै दिन द्वै गये हैं ।
सखि वे हम वे तुम वेई वने, पै कछू के कछू मन ह्वै गये है ॥

पुनश्च

धीर समीर सुतीर ते तीछन, ईछन कै सहु ना सहती में ।
त्यो पदमाकर चाँदनी चद, चित चहुँ ओर न चोकति जीमें ॥
छाय विछाय पुरैन के पातन, लोटति चदन की चवकी में ।
नीच कहा विरहा करतो सखि, होती कहू जुपै मीचु मुठी में ॥

पुनश्च

ऐसी न देखी सुनी सजनी, घति बाढति जाति वियोग की बाधा ।
त्यो पदमाकर मोहन को तव, ते कल है न कहुँ पल आधा ॥
लाल गुलाल घलाघल में, दृग ठोकर दे गई रूप अगाधा ।
कैगई कैगई चेटक सी मन लै गई लै गई लै गई राधा ॥

दोहा

घटकि रहे किन काम रत, नागर नंद किसोर ।
करहु कहा पीकन लगे, पिक पापी चहुँ मोर ॥१॥

विविध वियोग सिंगार यह, इक पूरव अनुराग ।
बरनन मान प्रवास पुनि, निरखि नेह की लाग ॥२॥

होत मिलन ते प्रथत ही, व्याकुलता उर आनि ।
सो पूरव अनुराग है, बरनत कवि रसखानि ॥३॥

पूर्वानुराग का उदाहरण

जैसी छवि स्याम की पगी है तेरी आँखिन में,
तैसी छवि तेरी स्याम आँखिन पगी रहै ।
कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्यों ही,
तेरी मुसिकानि कान प्रान में पगी रहै ॥
घीर घर धीर घर कीरति-किसोरी भई,
लगनि इतै उतै बरावार लगी रहै ।
जैसी रट तोहि लागी माधव की राधे ऐसी,
राधे - राधे - राधे रट माधवै लगी रहै ॥

पुनश्च

मोहि तजि मोहन मिल्यो है मन मेरो दौरि,
नैन हू मिले है देखि देखि साँवरो सरीर ।
कहै पदमाकर त्यो तान मय कान भये,
हौं तो रही जकि थकि भूली-सी भ्रमी-सी वीर ॥
एतो निरदई दई इनको दया न दई,
ऐसी दसा भई मेरी कैसे धरों तन धीर ।
हौं तो मनहू के मन नैनन के नैन जो पै,
कानन के कान तो पै जानतो पराई पीर ॥

प्रेम रस हाय लै जगाय लै हिये मो हित,
पाइ लै पहिरि चलु प्रेम पानियतु है ।
एरी मृगनैनी तेरे पाइलगि चैनी पाइ,
पाइ लगि तेरे फेरि पाइ नागियतु है ॥

निरखि नेंकु नीको बन्यो, त्यों कहि नन्दकुमार
सुभुज मेलि मेल्यो गरे, गज मोतिन को हार ॥

भविष्यत् प्रवास लक्षण—दोहा

पिय जु होय परदेस में, सो प्रवास उर आन ।
जाते होत वधून को, अति सन्ताप निदान ॥
सो प्रवास द्वै भाँति को, इक भविष्य इक भूत ।
तिनके कहत उदाहरण, रसग्रंथनि के सूत ॥

भविष्यत् प्रवास उदाहरण

औसर कौन कहा समयो कहा, काज विवाद ये कौन मो पावन ।
त्यो पदमाकर धीर समीर, उसीर भयो तपिके तन तावन ॥
चैत की चादनी चारु लखे, चरचा चलिवे की लगी जु चलावन ।
कैसी भई तुम्हें गग की गैल में, गीत मल्हारन के लगे गावन ॥

नये प्रवास का लक्षण—दोहा

रमन गमन सुनि ससिमुखी, भई दिवस को चद ।
परखि प्रेय पूरण प्रगट, निरखि रहे नँदनद ॥

नूतन प्रवास उदाहरण

कान्ह पगे कुविजा के कलोलनि, डोलन छोड़ि दई हर भाँती ।
माधुरी मूरति देखे विना, पदमाकर लागै न भूमि सुहाती ॥
का कहिये उनसो सजनी, यह वात है आपने भाग-समाती ।
दोस वसत को दोजै कहा, उलहै न करील की डारन पाती ॥

पुनश्च

रैन दिन नैनन ते बहतो न नीर कहा,
करतो अनंग की उमंग सर चापतो ।
कहै पदमाकर त्यों राग बाग वन कैसो,
तैसो तन ताय ताय तारापति तापतो ॥
कीन्हो जो वियोग तो सँजोग ही न देतो दई,
देतो जो सँजोग तो वियोगहि न थापतो ।
हौं तो जो न प्रथम सयोग सुख वैसो वह,
ऐसो अब तो न ये वियोग दुख व्यापतो ॥

अभिलाप लक्षण—दोहा

सुनत सदेस विदेस तजि, मिलते आय तुरंत ।
समुझि परत सुकृत जहँ, तहँ प्रगट्यो न बसंत ॥
इक वियोग सिंगार में, इती अवस्था थाप ।
अभिलाषा गुण कथन पुनि, पुनि उद्वेग प्रलाप ॥
चिंतादिक जो षट कही, विरह अवस्था जानि ।
सचारी भावन विषे, हौं आयो जु बखानि ॥
ताते इत बरनन न मैं, अभिलाषादिक चारि ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, हौं भाखत निरधारि ॥

अभिलाप उदाहरण

ऐसी मति होति अब ऐसो करौं आली वन-
माली के सिंगार में सिंगारिबोई करिये ।
कहै पदमाकर समाज तजि काज तजि,
लाज को जहाज तजि डारिबोई करिये ॥
परीन्चरी पल पल छिन छिन रैन-दिन,
नैनन की आरती उतारिबोई करिये ।

साँवरे जू रावरे यों विरह विकानी बाल,
बन बन बावरी लौं ताकिवो करनि है ॥

पुनश्च

प्रानन के प्यारे तन ताप के हरन हारे,
नंद के दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं।
कहै पदमाकर उरूझे उर अंतर यों,
अंतर चहे हू ये न अन्तर चहत हैं ॥
नैनन बसे हैं, अंग अंग हुलसे हैं रोम,
रोमन रसे हैं निकसेहँ को कहत हैं।
ऊधौ वे गुविन्द कोऊ और मथुरा में यहाँ,
मेरो तो गुविन्द मोहि मोही में रहत हैं ॥

निरखत घन घनस्याम कहि, भेटन उठत जु बाम।
विकल बीच ही करतु जनु, कर कमनैती काम ॥

मूर्छा लक्षण

दसा वियोगहि की कहत, जु है मूरछा नाम।
जहँ न रहति सुधि कौन हू, कहाँ शीत कहाँ घाम ॥

मूर्छा उदाहरण

एहो नंदलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल,
हाल ही चलो तो चलो जोरी जुरि जायगी।
कहै पदमाकर नहीं तो ये झकोरे लगे,
औरे लौं अचाक बिन घोरे घुरि जायगी ॥
सीरे उपचारन घनेरे घन सारन को,
देखत ही देखत दामिनी लो दुरि जायगी।
तौही लग चैन जौलो चेती है न चंदमुखी,
चेतैगी कहूँ तो चाँदनी में चुरि जायगी ॥

तो ही तो मन अवधि लो, रहै जु तिय निरमूल ।
नहिं तौ क्योंकर जियहिगी, निरखि सून से फूल ॥

हास्यरस लक्षण—दोहा

थायी जाको हास है, वहै हास्यरस जानि ।
तहँ कुरूप कूदब कहन, कछु विभावने मानि ॥
भेद मध्य अरु ऊँच स्वर, हँसिबोई अनुभाव ।
हर्ष, चपलता और हू, तहँ सचारी भाव ॥
श्वेत रंग रस हास्य को, देव प्रथम पति जासु ।
ताको कहत उदाहरण, सुनत जु आवै हासु ॥

उदाहरण

हँसि हँसि भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को,
पाहुनी जे आवैं हिमाचल के उछाह में ।
कहै पदमाकर सु काहू सो कहैं को कहा,
जोई जहाँ देखै सो हँसेई तहाँ राह में ॥
मगन भये हू हँसै नगन महेश ठाढे,
और हँसे एऊ हँस हँसी के उछाह में ।
सीस पर गंगा हँसै भुजन भुजगा हँसै,
हाँसी ही को दंगा भयो नंगा के विवाह में ॥
कर भूमर नाचत नगन, लखि हलधर को स्वाँग ।
हँसि हँसि गोपी फिर हँसैं, मनहुँ पिये सी भाँग ॥

करुण रस का लक्षण—दोहा

आलम्बन प्रिय को मरण, उद्दीपन दाहादि ।
थाई जाको शोक जहँ, वहै करुणरस आदि ॥
रोदति महिपति नादि जहँ, बरनत कवि अनुभाव ।
निरबेदादिक जानिये, तहँ सञ्चारी भाव ॥

चित्र कज्जल पे बरन, बरन देवता जान।
याविधि सो या करुणरस, वर्णत कवि कविताग ॥

उदाहरण

आसुन अन्हाय हाय-हाय कै कहत सब
औधपुरवासी के कहा यों दुख दाहिये।
कहै पदमाकर जुलूस युवराजी को सु,
ऐसो धनो ह्वै न जाय जाके सीस चाहिये ॥
सुत के पयान दसरथ ने तजे जो प्रान,
बाढ्यो सोक-सिंधु सो कहाँ लौं अवगाहिये।
मूढ मन्थरा के कहे बन को जु भेजे राम
ऐसी यह बात कैकेयी को तो न चाहिये ॥
राम भरत सुन मरण सुनि, दशरथ को बन माँह।
महि परि भे रोदति उच्चरि, हा पितु हा नरनाह ॥

रौद्र रस थायी लक्षण

थाई जाको क्रोध अति, बहे रौद्र रस नाम।
आलम्बन रिपु रिपु उमडि, उद्दीपन तिहि ठाम ॥
भृकुटि भगां अति अरुणाई, अधर दसन अनुभाव।
गरब चपलता और हू, तहँ सचारी भाव ॥
रक्त रग रस रौद्र को, रुद्र देवता जान।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान ॥

रौद्र रस उदाहरण

बारि टारि डारौं कुम्भकर्णहि बिदारि डारो,
मारौं मेघनादै आजु यो वल अनन्त हो।
कहै पदमाकर त्रिकूट ही को ढाय डारौं,
डारत करेई यातुधानन को अन्त हौं ॥

अच्छ की निरच्छ कपि पिरच्छ ह्वै उचारी इमि,
तोसे तिच्छ तुच्छन को कच्छुवै न गन्त हौं ।
जारि डारौं लङ्कहि उजारि डारौं उपवन,
फारि डारौं रावन को तौ मैं हनुमन्त हौं ॥

वीर रस लक्षण—दोहा

अधर चब्य गहि गब्ब अति, चहि रावण को काल ।
हग करान मुख लाल करि, दौरेउ दशरथ लाल ॥
जाको रस उत्साह शुभ, है इक थाई भाव ।
सुरस वीर है चारि विधि, कहत सबै कविराव ॥
युद्ध वीर इक नाम है, दया वीर विय नाम ।
दानवीर तीजो सुपुनि, धर्मवीर अभिराम ॥
युद्धवीर को जानिये, आलम्बन रिपु जोर ।
उद्दीपन ताको तबहि, पुनि सेना को सोर ॥
अंग फरकन हग अरुनई, इत्यादिक अनुभाव ।
गर्ब, असूया, उग्रता, तहँ सचारी भाव ॥
इन्द्र देवता बीर को, कुन्दन बरन बिसाल ।
ताको कहत उदाहरण, सुन जन होत कुमाल ॥

वीर रस उदाहरण

मोरे मन्न मोरे जे न छोडे सीम नगर की,
नगर लगूर उच्च ओज के अतका में ।
कहै पदमाकर त्यों हुंकरन फुंकरत
फैलत फलात फाल बांधत फलका में ॥
आगे रघुबीर के समीर के तनय के संग,
तारी दै तडाक तडा तडके तमका में ।

धर्मवीर लक्षण

धर्म बीर के कवि कहत, ए विभाव उर आन।
वेद सुमृति सीलन सदा, पुनि पुनि सुनब पुरान॥
वेद वचन क्रम वचन वपु, और हु हैं अनुभाव।
धृति आदिक बरणत सुकवि, तहँ संचारी भाव॥

धर्मवीर उदाहरण

तृन के समान धन धाम राज त्याग करि,
पाल्यो पितु वचन जो जानत जनैया है।
कहै पदमाकर विवेकही को बानो बीच,
साँचो सत्य वीर धीर धीरज धरैया है॥
सुमृत पुराण वेद आगम कह्यो जो पथ,
आचरत सोई सुद्ध करम करैया है।
मोद मति मंदिर पुरंदर मही को धन्य,
धरम धुरंधर हमारो रघुरैया है॥
धारि जटा बलकल भरत, गन्यो न दुख तजि राज।
भे पूजन प्रभु पादुकनि, परम धरम के काज॥

भयानक को दोहा

जाको थाई भाव भय, वहै भयानक जान।
लखन भयकर गजब कछु, ते विभाव उर आन॥
कंपादिक अनुभाव तहँ, संचारी मोहादि।
काल देव ब्रबेला बरण, सभ् यानक रस आदि॥

भयानक उदाहरण

झनकत आवै झुण्ड झिलम झलानि झप्यो,
तमकत आवै तेग वाही औ सिलाही है।

कहै पदमाकर त्यों दुंदुभी धुकार सुनि,
अक बक बोलै यों गनीम औ गुनाही है ॥
माधव की जान काल हूनं विकराल दल,
साजि धायो ए दई दई धों कहा चाही हैं ।
कौन को कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु,
का पै यों परैया भयो गजब इनाही हैं ॥

पुनश्च

ज्वाला की जलन सी जलाक जंग जालन की,
जोर की जमा है जोम जुलुम जिलाहे को ।
कहै पदमाकर न रहियो बनाये जग,
जानिम जगतसिंह रन अवगाहे की ॥
दौरि दावादाग्न पै द्वार सी दिवाकर की,
दामिनी दमकनि दलेल दादा दाहे की ।
काल की कुटुम्बिनि कला है कुलिन कालिका की,
कहर की कनकी नजरि कछवाहे की ॥

छप्पै

गुरन गुगुरन बगि, धूरि धुधुरत सु धूमहु ।
पदमाकर परचन्ड स्वच्छ लखि परत न भूमहु ॥
भागत अरि पर पग्ग मग्ग लग्गत अंग अगनि ।
तहँ प्रताप पृथिपाल स्यान खेलत खुलि खग्गनि ॥
तहँ तबहिं तोपि तुपगनि,तड़गि ततछान तेगनि तड़कि ।
धुकि धड़ धड़ धड़ धाड़धाड़ धाड़धड़ात तड़ा धड़कि ॥
एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराइ ।
बिकल बटोही बीच ही, पर्यो मूरछा खाइ ॥

धर्मवीर लक्षण

धर्म वीर के कवि कहत, ए विभाव उर आन ।
वेद सुमृति सीलन सदा, पुनि पुनि सुनब पुरान ॥
वेद वचन क्रम बचन बपु, और हु है अनुभाव ।
धृति आदिक बरणत सुकवि, तहँ संचारी भाव ॥

धर्मवीर उदाहरण

तृन के समान धन धाम राज त्याग करि
पाल्यो पितु बचन जो जानत जनैया है ।
कहै पदमाकर विवेकही को बानो बीच,
साँचो सत्य बीर धीर धीरज धरैया है ॥
सुमृत पुराण वेद आगम कह्यो जो पथ,
आचरत सोई सुद्ध करम करैया है ।
मोद मति मदिर पुरंदर मही को धन्य,
धरम धुरधर हमारो रघुरैया है ॥
धारि जटा बलकल भरत, गन्यो न दुख तजि राज ।
में पूजन प्रभु पादुकनि, परम धरम के काज ॥

भयानक का दोहा

जाको थाई भाव भय, वहै भयानक जान ।
लखन भयकर गजब कछु, ते विभाव उर आन ॥
कंपादिक अनुभाव तहँ, संचारी मोहादि ।
काल देव सबैला वरण, सभुयानक रस आदि ॥

भयानक उदाहरण

झलकत आवै झुण्ड झिलम झलानि झप्यो,
तमकत आवै तेग वाही औ सिलाही है ।

कहै पदमाकर त्यों दुंदुभी धुकार सुनि,
झक बक बोलै यों गनीम औ गुनाही है ॥
मावत की लाल काल हूतें बिकराल दल,
साजि धायो ए दई दई घों कहा चाही हैं।
कौन को कलेऊ सौं करैया भयो काल अरु,
का पें यो परैया भयो गजब इलाही हैं ॥

पुनश्च

ज्वाला की जलन सी जलाक अंग जालन की,
जोर की जमा है जोम जुलुम जिलाहे की ।
कहै पदमाकर सु रहियो बचाये जग,
जालिम जगतसिंह रंग अवगाहे की ॥
दौरि दावादारन पै द्वार सी दिवाकर की,
दामिनी दमकनि दलेल दावा दाहे की।
काल की कुटुम्बिनि कला ह्वै कुलिन कालिका की,
कहर की कुनकी नजरि कछवाहे की ॥

छप्पै

मुरन भुवुरत धरि, धूरि धुधुरत सु धूमहु ।
पदमाकर परतच्छ स्वच्छ लखि परत न भूमहु ॥
भागत अरि पर पग्ग मग्ग लग्गत अंग अगनि।
तहं प्रताप पृथिपाल ख्याल खेलत खुलि खग्गनि ॥

तहं तबहिं तोपि तुगनि,तदपि ततडान तेगनि तडकि ।
धुकि धड धडु धड धडाधड गडगड़ात तड़ा गड़कि ॥
एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराइ ।
बिकल बटोही बीच ही, पर्‌यो मूरछा खाइ ॥

वीभत्स लक्षण

थाई जासु गलानि है, सो वीभत्स गनाव ।
पीव, मेद, मज्जा, रुधिर, दुर्गंधादि विभाव ॥
नाक मूंदिवो कम्पतन रोम उठब अनुभाव ।
मोह असूया मूरछादिक संचारी भाव ॥
महाकाल सुर, नील रंग, सु बीभत्स रस जानि ।
ताको कहत उदाहरण, रस ग्रन्थनि उर मानि ॥

वीभत्स का उदाहरण—छप्पै

पटत गग अरु गृद्ध अन्न लीलत इमि जुग्गनि ।
मनहुं मिलन मदमत्त गरुड तिय अरुण उरगिनिनि ॥
हरवरात हरषात प्रथम परसत पल पगत ।
जहँ प्रताप जिति जग रंग अँग अंग उमगत ॥
जहँ पदमाकर उत्तपति अति, रन रक्त नद्दिय बहत ।
चखचकित चित्त चरबीन चुभि, चकचकाइ चंडी रहत ॥

दो०—रिपु अ अन की कुण्डली, कर जुग्गिनि जु चबाति ।
पीवहि में पागी मनो, जुवति जलेबी खाति ॥

अद्भुत रस का लक्षण

जाको थाई आचरज, सो अद्भुत रस नाव ।
असभवित जेते चरित, तिनको लखत विभाव ॥
वचन विचल बोलनि कँपनि, रोम उठनि अनुभाव ।
वितरक शंका मोह ये, तहँ सचारी भाव ॥
तासु देवता चतुरमुख, रंग बखानत पीत ।
सो अद्भुत रस जानिये, सकल रसन को मीत ॥

अद्भुत रस का उदाहरण

अधम अजान एक चढ़िके विमान भाख्यो,
पूछत हौं गंगा तोहिं परि परि पाइ हौं।
कहै पदमाकर कृपा करि बताउ साँची,
देखे अति अदभुत रावरे गुसाइ हौ॥
तेरे गुण गान हू की महिमा महान मैया,
कान कान नाइ के जहान मध्य छाइ हौं।
एक मुख गाये ताके पाँच मुख पाये अब,
पंच मुख गाइ हौं तौ केते मुख पाइ हौं।'

पुनश्च

गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली,
कोऊ जसुदा को औतर्यो इन्द्रजाली है।
कहै पदमाकर करै को यो उताली जापै,
रहन न पावै कहू एको मुख खाली है॥
देखै देवताली भई विधि के खुसाली कूदि,
किलकत काली हेरि हँसत कपाली है।
जनम को चाली एरी अदभुत है ख्याली,
आजु काली की फनाली पै नचत वनमाली है॥

पुनश्च

मुरली बजाइ तान गाइ मुसिकाइ मंद,
लटकि लटकि भाई नृत्य में निरत है।
कहै पदमाकर गुविन्द के उछाह माँहि,
विष को प्रवाह प्रति मुख ह्वै फिरत है॥

बिचल्यौ=रपट गया, डिग गया। मति=नही, बुद्धि। ढुरिहारिन=होली खेलने वाली स्त्रियां। मौरन=मन्य। दुगावनी=गाय दुहाई का शुल्क। पाहुनी=मेहमान। उरभि=अटक। बिजन=सूना, एकान्त। चबाइन=दोष द्रष्टा मौर वक्ता। उपटी=खुली छाप। का परी=क्या पड़ी। सु तौ=वह तो। द्यौस=दिवस, दिन। ब्वै चली=बो चली। कनैखिन=कटाक्ष। भराति=माक्रमण करती है। तऊ=तो भी। दूबरी=दुर्बल। चाइ=चाव, प्रसन्नता। थोर=झुण्ड। बोय=गन्ध। देहरी=दहलीज। ल्यावन=लाने। ल्याई=ले माई। हरुवें-हरुवें=धीरे-धीरे। माइ=मा। वीरन=भाई। परघर=पराये घर। न्योता=निमन्त्रण। उलही=प्रकट हुई। च्वै सी गई=चू गई, पक गई। चन्द्र उदौ=चन्द्रोदय। दुमालें=उपवस्त्र का छोर। रित=रिक्त। मछेह=मधिक। भभूरन=भभूको में।

मयानपन=मज्ञानपन। सयानपन=जवानी। तर्यौनन=कर्णफूल। वधाये=वधाई के समय गाये जाने वाले गीत विशेष। तनी=बन्धन। मचकी=हिंडोरे पर लम्बा झोटा लेना। खरके=खटकने पर। मैगल=मदमाता। मथाई=पुरुषो के बैठने का स्थान। अर्यौ गयौ=डूब गया। माट=घट, घड़े। सफरी=मछली। मरजैं=रोग को। वरजैं=रोके। उराहनो=उपालम्भ। धनी=पति। धनि=स्त्री, पत्नी। धमार=राग विशेष जो फागुन में गाया जाता है। परे से=पड़े हुए से। उठाने=मनौती मनाने के लिए कुछ पैसे उठाकर रखना। लटू=मोहित। गौनो=द्विरागमन। सौंह=कसम, शपथ। ह्यौं=यहां। सिरै=श्रेष्ठ। निसोठी=नीरस। लोटपटा=उलट-पुलट। ढफ=वाद्य विशेष। गाजत=गरजते हैं। छाक=दोपहर का भोजन, जो वन में किया जाता है। नखरा=तकल्लुफ, मान। दबकी=छिपी हुई। हवेली=मावास, गृह। सकरी=सकुचित, छोटी। ज्यौंत=

बानक । उनैसी=उठती सी । भोर=प्रातःकाल । झेलि देखौ झरप=चोट सह कर देख लो । सकेलि=सग्रह । मूठे=मुट्ठी, जो गुलाल की भरी होली में मारते हैं। जिठानी=पति के ज्येष्ठ भ्राता की पत्नी। उनये=उठे । हर मूसर=हल और मूसल, जो बलदाऊ धारण करते हैं । हसी खेल नहो=सहज नहीं है । अनी=नोंक । तरे=नीचे । उतानी=उतावली । हमाम=गर्म पानी का हौज । हार=खेतों का झुण्ड । कछारन=घाटियों में । डौर=डौल, ढंग । ठकन=परिहास करना । वारहदरी=बारहद्वारी । मवासो=झगड़ा, युद्ध । छरा=आभूषण विशेष, छल्ला । निसा=आशा । रागती=गाती । अध अनरा=आधे अक्षर । तन्त=अवसर में । सियरात=ठंडा पड़ता है । जऊ=स्त्री । पियरात=पीले पड़ते हैं । जुगजुगी=साम्मुख्य । डीठि=दृष्टि । तहाँई=उसी स्थान पर । पैठ=हाट । वैस=आयु ।

बाँधनू=बन्धन सहित, आगी, घाघरा वसन वस्त्र है । ऐंचे=खींचने पर । दुहनी=गाय दुहने का पात्र विशेष । घरी आधिक=आधी घड़ी । ढूके=ललचाये । औचक=अचानक । मींडि=मलना । मिताव=शीघ्र ही । गोत=गोत्र, परिवार । बिसाह्यो=मोल लिया । अनैसो=इनिश्चित । कहवत=कहावत, कही बात । फगुआ=फाग खेलने का पुरस्कार जो नायक नायिका को देता है । जेर=नीचे, पीछे । वज=व्यापार । तकंयन=तकने वाले, मन चले । घेंसी=घुसी । ऊरध=ऊर्ध्व । नवाय=झुकाकर । पहिरी पहराई=प्रमादी । उरमावै=दुख देती है । अवार=कष्ट । पंज=विरद । औघट=उत्पात । भमरि=घबरायक । उझकी=झाँकी । झझरीन=जालियो में । निते=नहीं । अधपक=आधा पका, गद्दर । अचरा=अचल । अभीतो=निर्भय । भीत=दीवार । रीती=सूनी । अकारथ=व्यर्थ । दृगतारन=आँखों की पुतलियाँ । जिन=मत, नहीं । पतरे=पतले, क्षीण । करेऊ=प्रातःकालीन स्वल्पाहार ।

चालो = गौना, द्विरागमन । अचाक = अचानक, अ
थापतो = स्थापित करना । व्यापतो = व्याप्त होता । डारिवोरै
ही । छ्वै = छू कर । ठगोरी = जादू, मोहनी । छलिया = छली
झांकि = व्याकुल करके ।

करिहा = कटि, कमर । उनहै न करील की डारन
करील की शाखाओं पर पत्ती नहीं उगती । कहा करतो = क्या
मेल्यो = डाला । घलाघली = अन्धाधुन्ध अबीर मारना या
ख्याल = मजाक, खेल ।

तीछन = तीक्षण । चेटक = जादू, टोना । घनो =
अधिकाधिक । डुलत = हिलते । झपि रहत = शान्त हो जाते ।
दर्शन । परस = स्पर्श । दवै = झुकते हैं । कासो = किससे । म
पुतली, नली ।

गजब इलाही = दैवी प्रकोप । खलीती = थैली । मि
प्रसन्न होते । खसम = पति । बिहद्द = अपार । लगनि = प्रेम
गेल = मग, पथ । चुभ्यो = गड गया है । खिरकी = खिड़की ।